॥ ओ३म् ॥

संस्कृत

तृतीयपुस्तकम् ।

जीवारामशर्मविरचितम्

तच्चेदम्

लक्ष्मीनारायणमुद्रणयन्त्रे

मुद्रापयित्वा प्रकाशितम्.

सं० १९६७ वि०

मूल्यम् ≡)   तृतीय संस्करणम्

Printer—Lakshmi Narayan
the Lakshmi Narayan Press, Moradabad.
Publisher—P. Jivaram Sharma, Moradabad.

ओ३म्

संस्कृत-

तृतीय-पुस्तकम्

बलदं सकलं मतिदं विमलं सवितारमजं विनयेन विभुम्
अनघंभगवन्तमतीव विधुं प्रणिपत्य नमामिजनामयहकम्

अइउण् ॥ १ ॥ ऋलृक् ॥ २ ॥ एओङ् ॥ ३ ॥ ऐऔच् ॥ ४ ॥ हयवरट् ॥ ५ ॥ लण् ॥ ६ ॥ ञमङणनम् ॥ ७ ॥ झभञ् ॥ ८ ॥ घढधष् ॥ ९ ॥ जबगडदश् ॥ १० ॥ खफछठथचटतव् ॥ ११ ॥ कपय् ॥ १२ ॥ शषसर् ॥ १३ ॥ हल् ॥ १४ ॥

इतिप्रत्याहारसूत्राणि ।

१—अण् । २—अक् इक्, उक्, । ३—एङ् । ४—अच्, इच् एच् ऐच्, । ५—अट् । ६—अण् इण् यण् । ७—अम् यम्, ङम् । ८—यञ् । ९—झष् भष् । १०—अश्, हश्, वश् भश्, जश् बश् । ११—छव् । ११—यय्, मय्, झय् खय्, चय्, । १३—यर् झर् खर्, चर्, शर्, । १४—अल् हल् वल्, रल्, झल् शल्, । इतने प्रत्याहार जानने चाहियें ॥

(प्रत्याहार के प्रत्येक वर्णका ज्ञान)

१ अण्—अ इ उ ॥ २ अक्—अ इ उ ऋ ऌ ॥३॥ अच्—अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ॥ ४ ॥ अट्—अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ॥ ५ ॥ अण्—अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ॥ ६ ॥ अम्—अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न ॥ ७ ॥ अश्—अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ॥ ८ ॥ अल्—अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह ॥ ९ ॥ इक्—इ उ ऋ ऌ ॥ १० इच्—इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ॥ ११ ॥ इण्—इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ॥ १२ ॥ उक्—उ ऋ ऌ ॥ १३ ॥ एङ्—ए ओ ॥ १४ ॥ एच्—ए ओ ऐ औ १५ ऐच्—ऐ औ ॥ १६ ॥ हश्—ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ज ब ग ड द ॥१७॥ हल्—ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह॥१८—यण्-य व र ल१९ यम्—य व र ल ञ म ङ ण न ॥ २० ॥ यञ्—य व र ल ञ म ङ ण न झ भ ॥ २१ ॥ यय्—य व र ल ञ म ङ ण न

झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प ॥ २२ ॥ यर्—य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ॥ २३ वश्—व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ॥ २४ वल्—व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह ॥ २५ ॥ रल्—र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ च ट त क प श ष स ह ॥ २६ ॥ मय्—म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प ॥ २७ ङम्—ङ ण न ॥ २८ झष्—झ भ घ ढ ध ॥ २९ झश्—झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प ॥ ३१ झर्—झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ॥ ३२ झल्—झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष ह ॥ ३३ भष्—भ घ ढ ध ॥ ३४ जश्-ज ब ग ड द ॥ ३५ बश्-ब ग ड द ॥ ३६ खय्-ख फ छ ठ थ च ट त क प ॥ ३७ खर्—ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ॥ ३८ छव्—छ ठ त च ट त ॥ ३९ चय्-च ट त क प ॥ ४० चर्—च ट त क प श ष स ॥ ४१ शर्—श ष स ॥ ४२ शल्—श ष स ह ।

अथाऽच्सन्धिप्रकरणम् ॥

(१) इको यणचि ॥ ६ । १ । ७७ ॥ इकः स्थाने यण् स्यादचि संहितायां विषये । इक् (इ, उ, ऋ, लृ) के स्थानमें यण् (य, व, र, ल) हो अच् परे तो सन्धि करनेमें जैसे-दधि-आनय = द, ध्, य्-आनय = दध्यानय । (तू दही ला) मधु-अत्र = म ध् व्-अत्र = मध्वत्र (शहद यहां) । पितृ-अर्चा = पि त् र्-अर्चा = पित्रर्चा । (पिता की पूजा) लृ-उच्चारणम् = ल्-उच्चारणम्=लुच्चारणम् । (लृ का बोलना) ॥(२) एचोऽयवायावः ॥ ६ । १ । ७८ ॥ एचः क्रमादय् अव् आय् आव् इमेस्युरचि । एच् (ए, ओ, ऐ, औ) प्रत्याहारको क्रम (सिलसिले-वार) से अय्, अव्, आय्, आव् ये आदेश हों (यानी उन की जगहपर होजावें) अच् परे हो तो । जैसे—चे अनम् = च्-अय्-अनम् = चयनम् (इकट्ठा करना) लो-अनम् = ल्—अव्—अनम् = लवनम् (काटना, छेदना) चै-अकः = च्-आय्-अकः = चायकः (इकट्ठा करनेवाला) । लौ-अकः=

१ दो वर्ण परस्पर निकट होनेसे मिलजाते हैं, उस का नाम संधि है जिसमें स्वरोंका मेलहोता है वह स्वरसन्धि और जिसमें व्यञ्जन का मेलहोता है वह हल्सन्धि कहाजाता है॥

लू-आव्-अकः = लावकः ॥ (३) अदेङ् गुणः॥१।१।२॥ अत् एङ् च गुणसञ्ज्ञः स्यात् ॥ अत् (अ) और एङ् (ए, ओ) गुण संज्ञक हों अर्थात् इनको गुण कहते हैं ॥ (४) आद् गुणः ॥ ६ । १ । ८७ ॥ अवर्णादचिपरे पूर्वपरयोरेको गुणादेशः स्यात् । अवर्ण (ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत तीनों प्रकारका अकार) से अच् परे होतो पूर्व और परके स्थानमें एक गुण (१) आदेश हो । जैसे-मनुज-इन्द्रः = मनुज्-ए-न्द्रः = मनुजेन्द्रः (राजा) । गङ्गा-उदकम् = गङ्ग्-ओ-दकम् = गङ्गोदकम् (जङ्गाजल) यहां मनुजके अकार का अकार और इन्द्रकी इ इन दोनोंको मिलकर ए होगया गङ्गाके अन्तका आ और उदक का उ इन दोनोंको मिलके ओ होगया ॥ (५) उरण् रपरः ॥ १ । १ । ५१ ॥ उः स्थानेऽण् प्रसज्यमान एव रपरः प्रवर्त्तते ॥ ऋ के स्थानमें में जो अण् (अ, इ, उ) आदेश हो वह रपर् हुआ ही प्रवृत्त हो (अर्, इर्, उर्) इसमें अण् प्रत्याहारके अक्षरों से परे र् दिखलाया है-जैसे–कृष्ण-ऋद्धिः = इसमें (४) गुण हुआ तब 'उरण् रपरः'-इस सूत्रसे कृष्ण के णकार का अकार और ऋद्धिकी ऋ को मिलकर अर् गुण हुआ तब कृष्णर्द्धिः (कृष्णकी वृद्धि) सिद्ध हुआ । एवमेव

१ जलतुम्बिकान्यायेन रेफस्योर्ध्वगमनम् ।

तव-लृकारः = तव् अल् कारः = तवल्कारः (तेरी लृ)। (६) लोपः शाकल्यस्य ॥८।३।१९॥ अवर्णपूर्वयो ऽपदान्तयोर्यवयोर्लोपो वाऽशि परे। अश् परे हो तो अवर्ण-पूर्वक पदान्त (सुप् और तिङ् जिसके अन्तमें हो) यकार और वकारका विकल्पसे लोप हो। जैसे—कवे इह = यहां (२) कव् अय् इह = कय इह। और द्वितीय पक्षमें जहां यकारका लोप नहीं हुआ वहां कवयिह (हे कवि यहां) प्रभो-आशु = (२) प्रभ्-अव्-आशु = प्रभ आशु। द्वितीय पक्षमें प्रभवाशु (हे स्वामिन जल्दी) ॥ (७) वृद्धिरादैच्॥१।१।१॥ आदैच् वृद्धिसंज्ञः स्यात् ॥ आ और ऐच् (ऐ, औ) की वृद्धि संज्ञा (इस्म) हो ॥ (८) वृद्धिरेचि ॥ ६ । १ । ८८ ॥ आदेचि परे वृद्धिरेकादेशः स्यात् ॥ अवर्ण से एच् (ए, ओ ऐ, औ) परे हो तो पूर्व और परके स्थान में एक वृद्धि आदेश हो। जैसे—तत्र-एकदा = तत्रैकदा (वहां एक समय) गङ्गा-ओघः = गङ्गौघः (गङ्गा का वेग) आर्य-ऐश्व-र्यम् = आर्यैश्वर्यम् (आर्योंकी प्रभुता, इकबाल)। प-ण्डित-औदार्यम् = पण्डितौदार्यम् (पण्डित की उदारता, फैयाज़ी)। यहां पर तत्र में त्र का अ और एकदा का ए इन दोनों को मिलके ऐ हुई गङ्गाके अन्तका आ

और ओघ का ओ इन दोनोंको मिलके औ हुआ। आर्य्य के यकार का अ और ऐश्वर्य की ऐ इन दोनोंको मिलके ऐ हुई। पण्डित के त का अ और औदार्यका औ इन दोनों को मिलके औ हुआ॥ (६) उपसर्गाः क्रियायोगे॥ १। ४। ५९॥ प्रादयः क्रियायोगे उपसर्गसंज्ञाः स्युः॥ प्रादिक क्रिया के योग में उपसर्ग संज्ञक हों॥ प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप, एते प्रादयः॥ (१०) उपसर्गादृतिधातौ॥ ६। १। ९१॥ अवर्णान्तादुपसर्गादृकारादौ धातौ परे वृद्धिरेकादेशः स्यात्॥ अवर्ण है अन्त में जिस के ऐसे उपसर्ग (९) से ऋकार है आदि में जिसके ऐसा धातु परे हो तो पूर्व पर के स्थान में वृद्धि एकादेश हो। जैसे-प्र-ऋच्छति = प्-आर्-च्छति = प्रार्च्छति प्र का अ और ऋच्छति की ऋ इन दोनों को मिलेक आर् वृद्धि हुई॥ (११) एङि पररूपम्॥ ६। १। ९४॥ आदुपसर्गादेङादौ धातौ परे पररूपमेकादेशः स्यात्॥ अवर्णान्तउपसर्ग (९) से एङ् (ए, ओ) है आदि में जिसके ऐसा धातु परे हो तो पररूप एकादेश हो। जैसे-प्र एजते = प्रेजते (वह बहुत

कांपता है)। उप-ओषति = उपोषति (वह बहुत जलता है) यहांपर प का अ एअत के एकाहीरूप होगया अर्थात् उसमें जामिला। उप में प का अ ओषति के ओ का ही रूप हो गया अर्थात् ओ में जामिला॥ (१२) अचोऽन्त्यादिटि ॥ १। १। ६४॥ अचां मध्ये योन्त्यः स आदिर्यस्य तट्टि संज्ञंस्यात्॥अचों के मध्य में जो अन्तका अच् वह है आदि में जिस समुदाय के वह टि संज्ञक हो। जैसे—मनस् यहां नकार में अकार अन्तका अच् है इससे आगे सकार हल् है उसके सहित अस् मात्र की टि संज्ञा हुई (११) ओमाङोश्च ॥ ६। १। ६५॥ ओमि आङिचात् परे पररूप मेकादेशः स्यात्॥ अकारसे ओम् अथवा आङ् परे हो तो पूर्व पर के स्थान में पररूप एकादेश हो। जैसे—शिवाय-ओम्-नमः = शिवायोन्नमः (कल्याणकारी परमात्माके लिये नमस्कृतिः)। शिव आङ्-इहि=शिव-एहि = (४) शिवेहि। यहां शिवायके यकार का अकार पररूप ओकार होगया। ङ् की इत् संज्ञा होकर लोप हो जाता है आ और इहि की इकोगुण होकर ए होता है पश्चात् शिव के वकार का अकार पररूप होजाताहै अर्थात् ए का ही रूप होजाताहै॥(१४) अकःसवर्णेदीर्घः॥ ६। १। १००॥

अकः सवर्णेऽचिपरे पूर्वपरयोर्दीर्घ एकादेशः स्यात् अक् (अ, इ, उ, ऋ, लृ)से सवर्णी अच्परे हो तो पूर्व तथा परके स्थान में दीर्घ एकादेश हो। जैसे मज्ञा-अरिः = मज्ञारिः (मज्ञाका दुश्मन)। कवि-ईशः=कवीशः। (कवियोंका स्वामी) भानु-उदयः = भानूदयः (सूर्य का निकलना) भ्रातृ-ऋद्धि = भ्रातृद्धिः (भाईकी वृद्धि) ॥ (१५) एङः पदान्तादति ॥ ६ । १ । १०८ ॥ पदान्तादेङोऽति परे पूर्वरूपमेकादेशः स्यात्। पदान्तके एङ् (ए, ओ)से अ परे हो तो पूर्व रूप एकादेश हो। जैसे–नृपते-अव = नृपतेऽव (हे राजन्! बचा) यहां ह्रस्व अ को पूर्वरूप एकार होगया। पूर्वरूप में अकार का "ऽ" यह चिह्न होता है। प्रभो-अलम् = प्रभोऽलम्। (हे स्वामिन्! बस) ॥ (१६) दूराद्धूते च ॥ ८ । २ । ८४ ॥ दूरात् सम्बोधने वाक्यस्य टेः प्लुतः स्यात्। दूर से पुकारने में वाक्यकी टि (१२) को प्लुत हो। जैसे–अत्रेहि देवदत्त ३। जिस अक्षर के आगे तीनका अक्षर हो उसको प्लुत समझना चाहिये ॥ (१७) प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् ॥ ६ । १ । १२५ ॥ एतेऽचि प्रकृत्या स्युः ॥ प्लुतसंज्ञक और प्रगृह्य संज्ञक अच्-परे हो तो नित्य प्रकृति से (ज्योंके त्यों) बने रहैं। जैसे–

आगच्छ चैत्र ३ अत्र (हे चैत्र ! यहां आ) यहां चैत्र ३. अत्र वाक्य की टि को प्लुत होनेसे (१४) से सन्धि नहीं हुआ॥ (१८) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् ॥ १ । १ । ११ । ईदूदेदन्तं द्विवचनं प्रगृह्यसंज्ञं स्यात्॥ईदन्त ऊदन्त और एदन्त जो द्विवचनान्त शब्दरूप उनकी प्रगृह्य (१७)संज्ञा हो । जैसे कवी-इमौ = कवी इमौ । साधू-एतौ = साधू एतौ । सुते-इमे= सुते इमे । यहांपर प्रगृह्य संज्ञा होने से (१४) कवी इमौ सन्धि नहीं हुआ । (१९) अदसो मात् ॥ १।१।१२॥ अस्मात् परावीदूतौ प्रगृह्यौ स्याताम् ॥ अदस् शब्द के मकार से परे ईदन्त और ऊदन्त शब्द प्रगृह्य संज्ञकहों । जैसे— अमी—ईश्वराः = अमी ईश्वराः (ये मालिक) । अमू-आर्य्यौ = अमू आर्य्यौ (वे दोनों आर्य्य हैं) प्रगृह्य संज्ञा होजाने से (१४, १) स० कार्य नहीं हुआ ॥ (२०) ओत् ॥ १ । १ । १५ ॥ ओदन्तो निपातः प्रगृह्यः स्यात् ॥ ओदन्त जो निपात वह प्रगृह्य संज्ञक हो । जैसे अहो आश्चर्य्यम् = अहो आश्चर्यम् (अह ! अचम्भे की बात है) प्रगृह्य संज्ञा होने से(२)से सन्धि नहीं हुआ॥(२१)अचो रहाभ्यां द्वे ॥ ८ । ४ । ४५ ॥ अच उत्तरौ यौ रेफहकारौ ताभ्यामुत्तरस्य यरो द्वे वा स्याताम्॥ अच् से परे जो रेफ हकार और

रेफ हकारसे परे जो यर् उसको विकल्प से द्वित्व (दो) हो जैसे- बारि-अमलम् = बार्य् अमलम् = (१) बार्य्यमलम् (साफ पानी) । द्वितीय पक्ष में जहां द्वित्व न हुआ वहां बार्यमलम् । एवमेव गौरी-औ = गौर्य्यौ। अथवा गौर्यौ यहां रेफ से परे यकार को विकल्पसे द्वित्व हुआ है (२२) ऋत्यकः ॥ १ । १ । १२७ ॥ ऋति परे पदान्ता अकः प्रागूवद् वा ॥ ऋकार परे हो तो पदान्त अक् को विकल्प से ह्रस्वादेश हो ।-जैसे-ब्रह्मा-ऋषिः = ब्रह्म ऋषिः । द्वितीय पक्ष में (४, ५) स० से ब्रह्मर्षिः (वेदके अर्थ को जानने वाला)॥

इत्यच्सन्धिः ॥

अथ हल्सन्धिः ॥

(२३) स्तोः श्चुना श्चुः ॥ ८ । ४ । ४० ॥ सकार-तवर्गयोः शकारचवर्गाभ्यां योगे शकारचवर्गौ स्याताम् ॥ सकार और तवर्ग (त थ द ध न) को शकार और चवर्ग (च छ ज झ ञ) के योग (मेल) में शकार और चवर्गादेश हो । जैसे—बालस्शेते = बालश्शेते (बालक सोता है)बालस्-चिनोति = बालश्चिनोति (लड़का इकट्ठा करता है) सत्-चित् = सच्चित् (आत्मा)। जगत्-जीवनम् = जगज्जीवनम्-

(संसार में जीना)। शार्ङ्गिन् जय = शार्ङ्गिञ्जय(हे धनुषधारी! जीत)॥(२४)शात्॥८।४।४३॥शात् परस्य तवर्गस्य श्चुत्वं न स्यात्॥शकार से परे तवर्गका योगहो तो तवर्गको चवर्गादेश न हो। जैसे—विश्—नः = विश्नः (घुसना)। प्रश्-नः प्रश्नः (पूछना)॥(२५) ष्टुना ष्टुः॥८।४।४०॥ स्तोः ष्टुना योगे ष्टुःस्यात्॥ सकार और तवर्ग को षकार और टवर्गके योगमें षकार और टवर्गादेश (ट ठ ड ढ ण) हों। जैसे—बालस्-षष्ठः = बालष्षष्ठः (छठा बालक)। बालस्—टीकते=बालष्टीकते।(बालक जाता है)पेष्-ता = पेष्टा (पीसने वाला)। तत्-टीका=तट्टीका(उसका तिलक)। चक्रिन्! ढौकसे = चक्रिण्ढौकसे (अयि चक्रधारी, हथियार वाले) तू जाता है)॥(२६) न पदान्ताट्टोरनाम्॥८।४।४२॥ पदान्ताट्टवर्गात्परस्याऽनामस्तोः ष्टुर्न स्यात्। पदान्त टवर्ग से परे नाम शब्द के नकार को छोड़कर सकार और तवर्ग को षकार और टवर्गादेश न हो। जैसे—षट्-सन्तः= षट्सन्तः (छः होतेहुये) षड्-ते = षड्ते (वे छह)॥ (२७) तोःषि॥८।४।४३॥ तवर्गस्य षकारे परे न ष्टुत्वम्॥ षकारपरे हो तो तवर्ग को षकार और टवर्गादेश न हो। जैसे—सन्-षष्ठः = सन्षष्ठः (छठाहोताहुआ)

यहांपर (२५) से मकार को णकार नहीं हुआ ॥(२८) झलां जशोऽन्ते ॥ ८ । २ । ३९ ॥ पदान्ते झलांजशः स्युः ॥ पदान्तमें झल् के स्थान में जश् आदेश हो जैसे-वाक्-ईशः = वागीशः (वाणीका स्वामी) । (२९) यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा ॥ ८ । ४ । ४४ ॥ यरः पदान्तास्याऽनुनासिके परे ऽनुनासिको वा स्यात् ॥ पदान्त यर् से अनुनासिक (ङ् ञ्, ण्, न्, म्) परे होतो यर् को विकल्प से अनुनासिकादेश हो । जैसे-एतत्-मन्त्रम्= एतन्मन्त्रम् (यह सलाह) जब अनुनासिक न हुआ तब एतद् मन्त्रम् (२८) से दकार हुआ ॥(३०) तोर्लि ॥८।४।५९॥ तवर्गस्य लकारे परे परसवर्णादेशःस्यात्॥तवर्ग से लकार परे होतो पर सवर्णादेश हो । जैसे-बृहत्-ललाटम्=बृहल्ललाटम्(बड़ामाथा) विद्वान्-लिखति = विद्वांल्लिखति (विद्वान् लिखता है) ॥ (३१)खरि च ॥ ८ । ४ । ५४॥ खरि झलां चरःस्युः खर् परे हो तो झलों को चर् आदेश हो । जैसे भेद्-तव्यम्-भेत्तव्यम् (फाड़ना चाहिये) ॥ (३२) झयोहोऽन्यतरस्याम् ॥ ८ । ४ । ६१ ॥ झयः परस्य हस्य वा पूर्वसवर्णः झय् से परे हकार को पूर्वसवर्णादेश विकल्प से हो । जैसे बृहत्-होमः = बृहद्धोमः (बडा हवन) द्वितीय पक्षमें(२८)

से बृहद्धोमः ॥ (३३) शश्छोऽटि ॥ ८ । ४ । ६३॥ झयः परस्य शस्यच्छो वाऽटि । झय् से परे शकार को छकार विकल्पसे हो । अट् परे हो तो । जैसे-परिक्षित्-शासनम् = परिक्षिच् (२३)-शासनम् = परिक्षिच्-छासनम् = परीक्षिच्छासनम् (परिक्षित् की आज्ञा) ॥ (३४) मोऽनुस्वारः ॥ ८ । ३ । २३ ॥ मान्तस्य पदस्याऽनुस्वारो हलि ॥ हल् परे हो तो पदान्त मकार को अनुस्वार हो । जैसे—गृहम्-याति = गृहंयाति (घर को जाता है) ॥ (३५) नश्चाऽपदान्तस्य झलि ॥ ८ । ३ । २४ । नस्य मस्य चापदान्तस्य झल्यनुस्वारः ॥ झल् परे हो तो अपदान्त नकार और मकार को अनुस्वारादेश हो । जैसे-यशान्-सि = यशांसि (कीर्ति) । अधिजिगाम्-सते = अधिजिगांसते (वह पढ़ना चाहता है) ॥ (३६) अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ॥ ८ । ४ । ५९ ॥ यय् प्रत्याहार परे हो तो अनुस्वार को परसवर्णादेश हो । जैसे-शाम्-तः = शां(३५) तः = शान्तः (शान्तिवाला ३७) वापदान्तस्य ॥ ८ । ४ । ५८ ॥ पदान्तस्य अनुस्वारस्य ययि परे परसवर्णो वा स्यात् ॥ यय् प्रत्याहार परे तो पदान्त अनुस्वार को विकल्प से पर

सवर्णादेश हो। जैसे-त्वम् करोषि = त्वं (३४) करोषि त्वङ्करोषि। पक्षमें त्वं करोषि (तू करता है)॥

इतिहल्सन्धिः

अथ विसर्गसन्धिः॥

(३८) खरवसानयोर्विसर्जनीयः॥ ८। ३। १५॥ खरि अवसाने च पदान्तस्य रस्य विसर्गः। खर् प्रत्याहार परे हो अथवा अवसान में पदान्त रेफ को विसर्ग हो। जैसे-वृक्षस्-छादयति=वृक्षरु(४१)छादयतिवृक्षः(३८) छादयति=वृक्षस्-(३९) छादयति = वृक्षश्छादयाते (१३) (तरु ढांकता है)॥ (३९) विसर्जनीस्यसः॥ ८। ३। ३४॥ विसर्जनीयस्य सः स्यात् खरि परे॥ खर् परे हो तो विसर्जनीय (:) को सकारादेश हो। जैसे—बालः तरति = बालस्तरति (लड़का तैरता है)॥ (४०) वाशरि॥ ८। ३। ३६॥ शरि विसर्गस्य विसर्गो वा॥ शर् प्रत्याहार परे हो तो विसर्ग को विकल्प से विसर्ग हो। जैसे-बालःशेते = बालःशेते पक्षमें (३९) बालस्-शेते = बालश्शेते (वह लड़का सोता है)॥ (४१) ससजुषो रुः॥ ८। २। ६६॥

पदान्तस्य सस्य सजुषश्च रुः स्यात् ॥ पदान्त सकार और सजुष शब्द के सकार को रु (र्) आदेश हो । जैसे-शिवस् अर्च्यः = शिव रु-अर्च्यः ॥ (४२) अतोरोरप्लुतादप्लुते । ६ । १ । ११३ । अप्लुतादतः परस्य रोरुः स्यादप्लुतेति । ह्रस्व अकार से परे रु को उकारादेश हो ह्रस्व अकार परे हो तो । जैसे (४१) शिव रु-अर्च्यः । इस स्थान में वकार के अन्तर्गत अप्लुत अकार से परे रु है और रु से आगे अर्च्य का अप्लुत अकार है अतएव रु के स्थान में 'उ' हुआ तब शिव-उ-अर्च्यः (४) से शिवो-अर्च्यः (१५)=शिवोऽर्च्यः (ईश्वर पूजनीय है) ॥ (४३) हशि च ॥ ६ । १ । ११४ ॥ अप्लुतात् अतः परस्य रोः उः स्याद् हशिपरे । अप्लुत अ से परे रु को उकारादेश हो हश् प्रत्याहार परे हो तो । जैसे-शिवस्-वन्द्यः = इस में प्रथम सकार के स्थान में (४१) से रु हुआ तब शिव रु-वन्द्यः = शिव शब्द के वकार में जो अकार है वह अप्लुत है इस से परे रु है और रु से परे वन्द्य का वकार हश् प्रत्याहार में है तब रु के स्थान में 'उ' हुआ शिव-उ वन्द्यः = (४) शिवोवन्द्यः (ईश्वर वन्दना करने योग्य है) ॥ (४४) भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि ॥ ८ । ३ ।

१७ ॥ एतत् पूर्वस्य रोर्यादेशोऽशि ॥ अश् परे हो तो भोस् भगोस् अघोस् तथा अवर्ण है पूर्व जिस के ऐसे रु के रेफ को यकारादेश हो। जैसे—भोस्-आगच्छ = (४१) भोरु-आगच्छ = भो य्-आगच्छ (६) भो आगच्छ (हे आ)। (४५) हलि सर्वेषाम् ॥ ८। ३। २२ ॥ भो भगो अघो अपूर्वस्य यस्य लोपः स्याद्धलि ॥ हल् प्रत्याहार परे हो तो सर्व वैयाकरणों के मत में भोस् भगोस् अघोस् और अवर्ण पूर्वक यकार का लोपहो। जैसे—भोस्-भृत्य ! = (४१) भोरु भृत्य ! = (४३) भोय्-भृत्य ! = (४४) भो भृत्य! (हे नौकर!)। एवमत्र भगोस्-नमस्ते = भगो नमस्ते (हे ऐश्वर्यवान् तेरे लिये प्रणाम है) ऐसे ही अघोस्-याहि अघो याहि (रे तू आ)। बालास्-यत्र = (४१) बाला रु-यत्र = (४३) बाला य्-यत्र = (४४) बाला यत्र (लड़के जहां) (४६) रो रि ॥ ८। ३। १४ ॥ रेफस्य रेफे परे लोपः ॥ रेफ (र्) से रेफ परे होतो पूर्व रेफ का लोपहो। जैसे—पुनर् रमते = पुन-रमते ॥ (४७) ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः ॥ ६। ३। १११ ॥ ढ्रेफयोर्लोप निमित्तयोः पूर्वस्याणो दीर्घः ॥ लोप निमित्तक ढ और रेफ परे होतो पूर्व अण् को दीर्घ हो। जैसे—(४६) से

पुन-रमत = पुनारमते (फिर खेलता है) । एवमेव पतिस्
रम्यः = पति रु-(४१) रम्यः = पति (४६) रम्यःहोकर
(४७) से दीर्घ होकर पतीरम्यः (सुन्दर-स्वामी) एव-
मेव भानुस्-राजते = भानु रु-(४१) राजते = भानु (४६)
राजते = भानू (४७) राजते (सूर्य्य चमकता है) ॥

इति विसर्गसन्धिः ॥

अथ सुबन्तप्रकरणम् ।

(सर्वादि) प्रोनाउन ।

सर्व १ (सब) विश्व २ (सम्पूर्ण) उभ ३ (दो)
उभय ४(दो अवयव विशेष)डतर और डतम यह प्रत्यय हैं,
इन प्रत्ययों के अन्तवाले शब्द लिये जाते हैं जैसे-कतर ५
(दो में से कौन) कतम ६ (सब मे कौनसा) अन्य ७
(दूसरा) अन्यतर ८ (दो में से एक) इतर ९ (दूसरा)
त्वत् १० त्व ११ (दूसरा) नेम १२ (आधा) सम १३
सिम १४ (सर्व) पूर्व १५ (पहिला) पर १६ (अगला)
अवर १७ (अन्तिका) दक्षिण १८ (दहिना) उत्तर १९
(बायां) अपर २० (द्वितीय) अधर २१ (नीचे) स्वः

२२ (अपना) अन्तर २३ (बीच) त्यद् २४ तद् २५ (वह) यद् २६ (जो) एतद् २७ इदम् २८ (यह) अदस् २९ (वह) एक ३० (एक) द्वि ३१ (दो) युष्मद् ३२ (तुम) अस्मद् ३३ (हम) भवतु ३४ (आप) किम् ३५ (कौन) ॥ इति सर्वादिः ॥

(पुँल्लिङ्ग अकारान्त सर्वशब्दः)

सर्वः, सर्वौ, सर्वे, १ सर्वम्, सर्वौ, सर्वान् २ सर्वेण, सर्वाभ्याम्, सर्वैः ३ सर्वस्मै, सर्वाभ्याम्, सर्वेभ्यः ४ सर्वस्मात्, सर्वाभ्याम्, सर्वेभ्यः ५ सर्वस्य, सर्वयोः, सर्वेषाम् ६ सर्वस्मिन् सर्वयोः, सर्वेषु ७ हे सर्व ! हे सर्वौ, हे सर्वे ८ इसी प्रकार विश्व, अन्य, अन्यतर, इतर, कतर, कतम, सम, सिम, नेम और एक शब्द के रूप होते हैं ॥

(उभशब्दः) यह शब्द दो वचन में ही आता है ॥ उभौ १ उभौ २ उभाभ्याम् ३, ४, ५ उभयोः ६, ७ ॥ (उभयशब्दः) इस में दो वचन नहीं होता ॥ उभयः, उभये १ उभयम्, उभयान् २ उभयेन, उभयैः ३ उभयस्मै, उभयेभ्यः ४ उभयस्मात्, उभयेभ्यः ५ उभयस्य, उभयेषाम् ६ उभयस्मिन, उभयेषु ७ हे उभय ? हे उभये ! ८ ॥ पूर्व, पर, अवर दक्षिण, उत्तर, अपर, अधर, स्व, अन्तर, इन नव शब्दोंके

प्रथमा विभक्ति के बहुवचन पञ्चमी तथा सप्तमी के एक वचन में भेद है, जैसे—पूर्वाः पूर्वे १ पूर्वात्, पूर्वस्मात् ५ पूर्वे, पूर्वस्मिन् ७। शेषरूप सर्वके तुल्य होते हैं ॥ प्रथम = पहिला। चरम = पिछिला । द्वितीय = दूसरा तृतीय = तीसरा। अल्प = थोड़ा। अर्ध = आधा। कतिपय = कुछ । उक्त प्रथमादि शब्दोंके बहुवचन में भेद है। जैसे प्रथमाः, प्रथमे, शेष विभक्तियों के रूप बालक के समान होते हैं ॥ द्वितीय और तृतीय शब्दों के चतुर्थी पञ्चमी तथा सप्तमी विभक्तिके एक वचन में दो २ रूप होते हैं जैसे द्वितीयस्मै, द्वितीयाय ४ द्वितीयस्मात्, द्वितीयात् ५ द्वितीयस्मिन, द्वितीये ७ तृतीयस्मै तृतीयाय ४ तृतीयस्मात्, तृतीयात् ५ तृतीयस्मिन्, तृतीये ७।शेषरूप बालक के समान होते हैं ॥

प्रकाशः = रोशनी । पङ्कजः = कमल। वैयात्यम् = वेशर्मी। उपयोगः = इस्तेमाल।भारः = बोझा। निवासः = रहना।प्रतिबन्धः = रुकावट। प्रथितः = मशहूर। निहितम् = रक्खा हुआ। परस्परम् = आपस में। दुर्विनीतः = अशिक्षित, वेतमीज़। युगुलम्। दो। सम्पर्कः = मेल । प्रतिक्षणम् = हरवक्त। पर्यवसानम् = अन्त । कारागारः = जेलखाना। कर्त्तनम् = काटना।अर्ज्जनम् = इकट्ठा करना।भेषजम् = दवा।

खर्ज्जनम् = खुजलाना । मार्जनम् = शुद्ध करना । भर्जनम् = भूनना, भूंजना । विमर्दः = व्याघात, धक्कमधक्का । विमर्दनम् = घोटना । मर्दनम् = रगड़ना ॥

(निर्जर शब्दः) जो बुड्ढा न हो ।

निर्जरः निर्जरौ, निर्जसौ, निर्जराः, निर्जरसः १ निर्जरम्, निर्जरसम्, निर्जरौ, निर्जसौ, निर्जरान्, निर्जरसः २ । निर्जरेण, निर्जरसा, निर्जराभ्याम्, निर्जरैः । ३ निर्जराय, निर्जरसे, निर्जराभ्याम्, निर्जरेभ्यः।४ निर्जरात्, निर्जरसः, निजराभ्याम्, निर्जरेभ्यः । ५ निर्जरस्य, निर्जरसः, निर्जरयोः, निर्जरसोः, निर्जराणाम्, निर्जरसाम् । ६ निर्जरसि, निर्जरे, निर्जरयोः, निर्जरसोः, निर्जरेषु । ७ हे निर्जर ! हे निर्जरौ, हे निर्जरसौ, हे निर्जराः हे निर्जरसः ८॥

(पु० आकारान्त विश्वपा शब्दः) ईश्वर ।

विश्वपाः, विश्वपौ, विश्वपाः १ विश्वपाम्, विश्वपौ विश्वपाः २ विश्वपा, विश्वपाभ्याम्, विश्वपाभिः ३ विश्वपे, विश्वपाभ्याम्, विश्वपाभ्यः ४ विश्वपः, विश्वपाभ्याम्, विश्वपाभ्यः, ५ विश्वपः, विश्वपोः विश्वपाम् ६ विश्वपि, विश्वपोः विश्वपासु ७ हे विश्वपाः!

हे विश्वपौ, विश्वपाः ८। इसी प्रकारनिधिपा (कोषाध्यक्ष गोपा (ग्वाला) शंखध्मा (शंखबजाने वाला) आदि समस्त आकारान्त शब्दों के रूप होते हैं॥

(भाषाबनाओ)

धर्मस्य प्रकाशाय विद्यां पठामि। अत्र पङ्कजस्योपयोगस्याऽऽवश्यकता नाऽस्ति। ते भारं तत्र कथं नयन्ति। अस्माकमत्र निवासे प्रतिबन्धोऽस्ति। भवन्तः शाटानां कर्त्तने प्रथिताः सन्ति। कस्य पुस्तकानि निहितानि सन्ति। परस्परं यूयं विमर्दं कथमकार्ष्ट। खलस्य सम्पर्कः प्रतिक्षणं दुःखदो भवति। विश्वपि ते विश्वासोनास्ति॥

(संस्कृत बनाओ)

आपके व्याख्यान का कभी अन्त भी होगा। इस शहर के जेलखाने में कितने बन्दी हैं। पापों का इकट्ठा करना अच्छा न होगा। घरका शुद्ध करना सदा अच्छा है। ईश्वर में उसका विश्वास नहीं है। इस खजानची के पास कितने रुपये हैं॥

(हाहा शब्दः) शोक की आवाज।

हाहाः, हाहौ, हाहाः १ हाहाम्, हाहौ, हाहान् २ हाहा,

हाहाभ्याम्, हाहाभिः ३ हाहै, हाहाभ्याम्, हाहाभ्यः ४ हाहाः, हाहाभ्याम्, हाहाभ्यः ५ हाहाः, हाहौः, हाहाम् ६ हाहे, हाहौः, हाहासु ७ स० हे हाहाः, हे हाहौ, हे हाहाः८॥

(ह्रस्व इकारान्त असि शब्दः) तरवार ।

असिः, असी, असयः १ असिम्, असी, असीन् २ असिना, असिभ्याम्, असिभिः, ३ असये, असिभ्याम्, असिभ्यः ४ असेः, असिभ्याम्, असिभ्यः ५ असेः, अस्योः असीनाम् ६ असौ, अस्योः, असिषु, ७ स० हे असे ! हे असी ! हे असयः ! ॥

इसी प्रकार—निधि (खजाना) विधि (तरकीब) आधि (मनकी पीड़ा) व्याधि (बीमारी) उपाधिः (पदवी) पयोधि (समुद्र) प्रणधि (दूत) सन्धि (मेल) अग्नि (आग) अहि (सांप) कवि (शायर) ग्रन्थि (गांठ) पाणि (हाथ) छादि (छत) दुर्मति (वेवकूफ) नाभि (टूंडी) गिरि (पहाड़) राशि (समूह) प्रतिनिधि (एवजी) रवि (सूर्य) इकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप होते हैं ॥

(उकारान्त वायु शब्दः) हवा ।

वायुः, वायू, वायव १ वायुम्, वायू, वायून्, २ वायुना, वायुभ्याम्, वायुभिः ३ वायवे, वायुभ्याम्, वायुभ्यः

४ वायोः, वायुभ्याम्, वायुभ्यः ५ वायोः, वाय्वोः, वायूनाम् ६ वायौ, वाय्वोः, वायुषु ७ स० हे वायो! हे वायू! हे वायवः!॥ इसीप्रकार—मन्यु (क्रोध) पशु (ढोर) ऊरु (जङ्घा) प्रभु स्वामी) पटु (चतुर) वटु (बालक) चटु (प्यारा वचन) तन्तु (धागा) तर्कु (तकला) धातु (मसदर) पङ्गु(लङ्गड़ा) पिचु (कपास) बन्धु (भाई) बाहु (भुजा) भविष्णु (होनहार) भीरु (डरपोक) मृत्यु (मौत) परमाणु (ज़र्रा) चाटुचटु (खुशामदी) असु (प्राण) आखु (चूहा) इषु (बाण) क्रतु (यज्ञ) रिपु (दुश्मन्) सूनु (लड़का) चरिष्णु (चालाक) उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप होते हैं ॥

(सखिशब्दः) मित्र ।

सखा, सखायौ, सखायः १ सखायम्, सखायौ, सखीन् २ सख्या, सखिभ्याम्, सखिभिः ३ सख्ये, सखिभ्याम्, सखिभ्यः ४ सख्युः, सखिभ्याम्, सखिभ्यः ५ सख्युः सख्योः, सखीनाम् ६ सख्यौ, सख्योः, सखिषु ७ स० हे सखे! हे सखायौ, हे सखायः ॥

(पतिशब्दः) मालिक ।

पतिः, पती, पतयः १ पतिम्, पती, पतीन् २ पत्या पतिभ्याम्, पतिभिः ३ पत्ये, पतिभ्याम्, पतिभ्यः ४ पत्युः,

पतिभ्याम्, पतिभ्यः ५ पत्युः, पत्योः, पतीनाम् ६ पत्यौ, पत्योः, पतिषु ७ स० हे पते ! हे पती ! हे पतयः ! ॥

(भाषा बनाओ)

प्रभो ! पङ्गुरयं क्रतुं कर्तुं वाञ्छति । पटो ! वटोरिदं शकटं भविष्यति । अस्य शाटस्य तन्तवो वरं न सन्ति । मम बाहोर्बलं भविष्यति तर्हि द्रक्ष्यामि । चाटुचटोर्वचनानि नो मन्यामहे । अयं तर्कुः कीदृशोऽस्ति । कस्य धातोरिदं रूपं भवति । तत्रत्यानां भीरूणां सूनूनामियं वार्त्ताऽस्ति । मृत्योरिमां वेलां भवत्सु के जानन्ति । अस्माकमयमसिः सर्वेष्वसिषु वरमस्ति

(संस्कृत बनाओ)

खजाने में इस समय कितना रुपया है । यह पदवी आप के लिये किस चतुर आदमी ने दी है । समुद्र में डरपोक आदमी कब जाते हैं । ऐसे काम बेवकूफ लड़कोंके होते हैं । इस मकान की छत पर क्या कोई मनुष्य रहते हैं ? । पहाड़ में जाकर आपने क्या २ देखा । उन लड़कों के हाथों में कौन २ पुस्तक हैं ? ।

(बहुवचनान्त कति शब्दः) कितने ।

कति १ कति २ कतिभिः ३ कतिभ्यः ४ कतिभ्यः ५ कतीनाम् ६ कतिषु ७ ॥

(बहुवचनान्त त्रिशब्दः) तीन ।

त्रयः१ त्रीन्२ त्रिभिः ३ त्रिभ्यः४ त्रिभ्यः५ त्रयाणां ६ त्रिषु ७॥

(द्विवचनान्त द्विशब्दः) दो

द्वौ १ द्वौ २ द्वाभ्याम् ३, ४, ५, द्वयोः ६, ७ ॥

(ईकान्त पपीशब्दः) सूर्य ।

पपीः, पप्यौ, पप्यः १ पपीम्, पप्यौ, पपीन् १ पप्या, पपीभ्याम्, पपीभिः ३ पप्ये, पपीभ्याम्, पपीभ्यः ४ पप्यः, पपीभ्याम्, पपीभ्यः ५ पप्यः पप्योः, पप्याम् ६ पपी, पप्योः, पपीषु ७ सं० हे पपीः, हे पप्यौ, हे पप्यः ॥

कुविन्दः = जुलाहा । नेजकः = रजकः, धोबी । सन्दर्भः = रचनम्, बनाना । संरम्भः = कोपः, गुस्सा । समासः = संक्षेप, मुख्तासिर । व्यासः = विस्तार, फैलाव । वैषम्यम् = विरोधः, बरखिलाफ । कोविदारः = कचनाल । गताक्षरः = मूर्ख । पेचकः = उलूकः, उल्लू । परिवादः = असूया, निन्दा । अलीकम् = मृषा, झूठ । प्रतीकारः = प्रायश्चित्तम्, उपाय ।

१ इसके तीनो लिङ्गोमें ऐसे ही रूप होते हैं ।

प्रणयः = स्नेह । आयासः = परिश्रम । प्रयासः = प्रयत्न ॥

(बहुश्रेयसी शब्दः)

बहुत कल्याणप्रद स्त्रियों वाला ।

बहुश्रेयसी, बहुश्रेयस्यौ, बहुश्रेयस्यः १ बहुश्रेयसीम्, बहुश्रेयस्यौ, बहुश्रेयसीन् २ बहुश्रेयस्या, बहुश्रेयसीभ्याम्, बहुश्रेयसीभिः ३ बहुश्रेयस्यै, बहुश्रेयसीभ्याम्, बहुश्रेयसीभ्यः ४ बहुश्रेयस्याः, बहुश्रेयसीभ्याम् , बहुश्रेयसीभ्यः ५ बहुश्रेयस्याः, बहुश्रेस्योः, बहुश्रेयसीनाम् ६ बहुश्रेयस्याम्, बहुश्रेयस्योः, बहुश्रेयसीषु ७ स० हे बहुश्रेयसि, हे बहुश्रेयस्यौ, हे बहुश्रेयस्यः । इसीप्रकार अतिलक्ष्मी शब्द के रूप होते हैं, प्रथमा में अति लक्ष्मीः रूप होताहै ॥

(संस्कृत बनाओ)

आप जानते हैं सूर्य कितने हैं? । जी हां जानता हूं बहुत हैं । यहां के जुलाहों का काम कैसा चलता है । आपका धोबी कपड़ोंको कब देगा क्योंकि हमको शीघ्र ही आवश्यकताहै । इस किताबकी रचना कैसी होगी यह मैं जानना चाहता हूं । गुस्से से आपस में विरोध होता है अतएव आप ऐसा न करें ।

(भाषा बनाओ)

अहं समासेन वदिष्यामि न तु व्यासेन। वार्त्तेयं गताक्षराणामस्त्यतो वयं न श्रोष्यामः। अयं पेचकः साधूनां सदा परिवादं करोत्यतोऽस्य भेषजमस्माभिः कर्त्तव्यम्। तेषां पङ्गूनां वचनान्यलीकानि न च सत्यानि। भवतामायासस्य प्रणयस्य च ते श्लाघामकार्षुः। कतीनां मनुष्याणामत्र भोजनं भविष्यति द्वयोरथवा त्रयाणाम्? ॥

(प्रधी शब्दः) महा बुद्धिमान्।

प्रधीः, प्रध्यौ, प्रध्यः १ प्रध्यम्, प्रध्यौ, प्रध्यः २ प्रध्या, प्रधीभ्याम्, प्रधीभिः ३ प्रध्ये, प्रधीभ्याम्, प्रधीभ्यः ४ प्रध्यः प्रधीभ्याम्, प्रधीभ्यः ५ प्रध्यः, प्रध्योः, , प्रध्याम् ६ प्रध्यि, प्रध्योः, प्रधीषु ७ स० हे प्रधीः, हे प्रध्यौ, हे प्रध्यः। इसी प्रकार ग्रामणी (गांव का मालिक) सेनानी (फौज का अफसर) के रूप होते हैं परंतु सप्तमी के एक वचन में भेद है जैसे—ग्रामण्याम्। सेनान्याम्।

(नी शब्दः) लेजानेवाला।

नीः, नियौ, नियः १ नियम्, नियौ, नियः २ निया, नीभ्याम्, नीभिः ३ निये, नीभ्याम्, नीभ्यः ४ नियः

नीभ्याम्, नीभ्यः ५ नियः नियोः, नियाम् ६ नियाम्, नियोः, नीषु ७ स० हे नीः, हे नियौ, हे नियः ॥

(सुश्री शब्दः) श्रेष्ठशोभायुक्त ।

सुश्रीः, सुश्रियौ, सुश्रियः १ सुश्रियम्, सुश्रियौ, सुश्रियः २ सुश्रिया, सुश्रीभ्याम्, सुश्रीभिः ३ सुश्रिये, सुश्रीभ्याम् सुश्रीभ्यः ४ सुश्रियः, सुश्रीभ्याम्, सुश्रीभ्यः ५ सुश्रियः, सुश्रियोः, सुश्रियाम् ६ सुश्रियि, सुश्रियोः सुश्रीषुः ७ स० हे सुश्रीः, हे सुश्रियौ, हे सुश्रियः । इसी प्रकार यवक्री (जौ खरीदने वाला) शुद्धधी (पवित्र बुद्धिवाला) सुधी (अच्छी बुद्धि वाला) शब्दों के रूप होते हैं ॥

(सुखी शब्दः) सुखकी इच्छा करनेवाला ।

सुखीः, सुख्यौ, सुख्यः १ सुख्यम्, सुख्यौ, सुख्यः, २ सुख्या, सुखीभ्याम्, सुखीभिः ३ सुख्ये, सुखीभ्याम् सुखीभ्यः ४ सुख्युः, सुखीभ्याम्, सुखीभ्यः ५ सुख्युः, सुख्योः सुख्याम् ६ सुख्यि, सुख्योः, सुखीषु ७ हे सुखीः, हे सुख्यौ, हे सुख्यः । इसी प्रकार सुती (पुत्र की इच्छा करने वाला) शब्दके रूप समझो ॥

(क्रोष्टु शब्दः) शृगाल, स्यार ।

क्रोष्टा, क्रोष्टारौ, क्रोष्टारः १ क्रोष्टारम्, क्रोष्टारौ, क्रोष्टून्

क्रोष्टुना, क्रोष्ट्रा, क्रोष्टुभ्याम्, क्रोष्टुभिः ४ क्रोष्टवे, क्रोष्ट्रे क्रोष्टुभ्याम्, क्रोष्टुभ्यः ४ क्रोष्टोः, क्रोष्टुः, क्रोष्टुभ्याम्, क्रोष्टुभ्यः ५ क्रोष्टोः, क्रोष्टुः, क्रोष्ट्वोः, क्रोष्ट्रोः, क्रोष्टूनाम् ६ क्रोष्टौ, क्रोष्टरि, क्रोष्ट्वोः क्रोष्ट्रोः, क्रोष्टुषु ७ स० हे क्रोष्टो ! हे क्रोष्टारौ ! हे क्रोष्टारः !॥

अनुनयः, = विनयः, आजिजी । नीहारः = कुहिरा । प्रातराशः = कलेवा, सुबह का भोजन । प्रचयः = समूह । प्राचीनम् = पुराना । अर्वाचीनम् = नया । उपचयः = वृद्धि, तरक्की । अपचयः = हानि, नुकसान । बीजम् = कारण । पर्यवस्था = विरोध । बहिरङ्गम् = बाहरी । अन्तरङ्गम् = भीतरी । कुङ्कुमम् = केशर । पर्युषितम् = बासी । अरण्यम् = वन । विचक्षणः = होशियार । कृपणः = सूम। पाणिपीडनम् = विवाह । इषीका = सींक । वितानम् = तम्बू । श्रान्तः = थकाहुआ । दलम् = पत्र । वार्षिकम् = सालाना । उपयोगः = इस्तेमाल । वियोगः = जुदाई । प्रयोगः = नुसखा । नियोगः = आज्ञा । पटहः = ढोल । झल्लकम् = मजीरा । महर्घम् = महगा । सुलभम् = सस्ता । क्लेदनम् = भिगोना । उपालम्भः = शिकायत । आरोहः=

ऊंचाई। परिणाहः = मुटाई। आयामः = लम्बाई। विस्तृतिः = चौड़ाई। चित्तम्=तबीयत

(ऊकारान्त हूहू शब्दः) हूहू करनेवाला।

हूहूः, हूह्वौ, हूह्वः १ हूहूम्, हूह्वौ, हूहून् २ हूह्वा, हूहूभ्याम्, हूहूभिः ३ हूह्वे, हूहूभ्याम्, हूहूभ्यः ४ हूह्वः, हूहूभ्याम् हूहूभ्यः ५ हूह्वः, हूह्वोः, हूह्वाम्, ६ हूह्वि, हूह्वोः, हूहूषु ७ स० हे हूहूः, हे हूह्वौ, हे हूह्वः॥

(अतिचमूशब्दः) बहुत सेनावाला।

अतिचमूः, अतिचम्वौ, अतिचम्वः १ अतिचमूम् अतिचम्वौ, अतिचमून् २ अतिचम्वा, अतिचमूभ्याम्, अतिचमूभिः ३ अतिचम्वे, अतिचमूभ्याम्, अतिमूभ्यः ४ अतिचम्वाः, अतिचमूभ्याम्, अतिचमूभ्यः ५ अतिचम्वाः, अतिचम्वोः, अतिचमूनाम् ६ अतिचम्वाम्, अतिचम्वोः, अतिचमूषु ७ स० हे अतिचमु! हे अतिचम्वौ हे अतिचम्वः॥

(खलपू शब्दः) दुष्टों को पवित्र करनेवाला।

खलपूः, खलप्वौ, खलप्वः १ खलप्वम्, खलप्वौ, खलप्वः २ खलप्वा, खलपूभ्याम्, खलपूभिः ३ खलप्वे, खलपूभ्याम् खलपूभ्यः ४ खलप्वः, खलपूभ्याम्, खलपूभ्यः ५ खलप्वः

खलप्वोः, खलप्वाम् ६ खलप्वि, खलप्वोः, खलपूषु ७ स० हे खलपूः! हे खलप्वौ, हे खलप्वः! ८

इसी प्रकार सुलू (अच्छे प्रकार काटनेवाला) वर्षाभू (वर्षा में पैदा होने वाला) दृन्भू (वज्र) करभू (हाथ में उत्पन्न होने वाला) पुनर्भू (फिर होने वाला) शब्दों के रूप होते हैं ॥

(स्वभूशब्दः) ईश्वर

स्वभू, स्वभुवौ, स्वभुवः, १ स्वभुवम्, स्वभुवौ, स्वभुवः, २ स्वभुवा, स्वभूभ्याम्, स्वभूभिः ३ स्वभुवे, स्वभूभ्याम्, स्वभूभ्यः ४ स्वभुवः, स्वभूभ्याम्, स्वभूभ्यः ५ स्वभुवः, स्वभुवोः, स्वभुवाम् ६ स्वभुवि, स्वभुवोः, स्वभूषु ७ स० हे स्वभूः! हे स्वभुवौ, हे स्वभुवः ॥

(ऋकारान्त धातृ शब्दः) धारण या पोषण-करनेवाला ॥

धाता, धातारौ, धातारः १ धातारम्, धातारौ, धातॄन् २ धात्रा, धातृभ्याम् धातृभिः ३ धात्रे, धातृभ्याम्, धातृभ्यः ४ धातुः, धातृभ्याम् धातृभ्यः ५ धातुः, धात्रोः, धातॄणाम् ६ धातरि, धात्रोः धातृषु ७ स० हे धातः! हे धातारौ! हे धातारः! इसी प्रकार

कर्तृ बनानेवाला । भर्त्त = (पति) नप्तृ = नाती, धेवता)
होतृ = होम करनेवाला । प्रशास्तृ = (हुक्म करनेवाला)
वक्तृ = (कहनेवाला)

(ऋकारान्त भ्रातृशब्दः) भाई ।

भ्राता, भ्रातरौ, भ्रातरः १ भ्रातरम् भ्रातरौ । इन पांच-वचनों के सिवाय समस्त रूप धातृ के समानहोते हैं, । पितृ = पिता । जामातृ = दामाद । देवृ = देवर । नृ = मनुष्य शब्द में के रूप भ्रातृ के समान होतेहैं परन्तु नृशब्द के षष्ठी विभक्ति के बहु वचन में भेद है जैसे नृणाम्, नृणाम् ।

(ऐकारान्त रैशब्दः) धन

राः, रायौ, रायः १ रायम्, रायौ, रायः २ राया, राभ्याम् राभिः ३ राये, राभ्याम्, राभ्यः ४ रायः, राभ्याम्, राभ्यः ५ रायः, रायोः, रायाम् ६ रायि, रायोः, रासु ७ स० हे राः! हेरायौ ! हे रायः! ॥

(ओकारान्त गोशब्दः) बैल

गौः, गावौ, गावः १ गाम्, गावौ, गाः २ गवा, गोभ्याम् गोभिः ३ गवे, गोभ्याम्, गोभ्यः । गोः, गोभ्याम्, गोभ्यः ५ गोः, गवोः, गवाम् ६ गवि, गवोः, गोषु ७ स० हे गौः ! हे गावौ ! हे गावः ! ॥

(संस्कृत बनाओ)

इस बन में स्यार बहुत रहते हैं। उन दोनो बालकों में विनय बहुत है। आज रात्रि में कुहिरा गिरेगा। ये सब काम पुराने हैं एक भी नया नहीं। विद्याकी वृद्धि सबको करना चाहिये। उसके कहने में विरोध है।

(भाषा बनाओ)

किमत्र बीजं येन भवन्तोऽत्र नाऽऽगच्छन्ति ?। प्रचुराणि बीजानि सन्ति तानीदानीं वक्तुं न वाञ्छामः। भवद्भिः प्रातराशः कृतः ? वायुनोत्खातास्तरवो विश्वेऽस्माकम्। बहिरङ्गंकार्य्यमस्त्यन्तरङ्गंवा ?। पर्युषितमशनं कदापि नो अशनीयम्। किं भवन्तः खल्वः सन्ति ?॥

इत्यजन्तपुँल्लिङ्गः॥

अथाऽजन्तस्त्रीलिङ्गः (सर्वाशब्दः)।

सर्वा, सर्वे, सर्वाः १ सर्वाम्, सर्वे, सर्वाः २ सर्वया, सर्वाभ्याम्, सर्वाभिः ३ सर्वस्यै, सर्वाभ्याम्, सर्वाभ्यः ४ सर्वस्याः, सर्वाभ्याम्, सर्वाभ्यः ५ सर्वस्याः, सर्वयोः, सर्वासाम् ६ सर्वस्याम्, सर्वयोः, सर्वासु ७ स० हे सर्वे, हे सर्वे हे सर्वाः

---

१ इसी प्रकार विश्वा, अन्या, अन्यतरा, इतरा, कतरा, कतमा, समा, सिमा नेमा, एका शब्दों के रूप होते हैं॥

(इकारान्त मतिशब्दः) बुद्धि ।

मतिः, मती, मतयः १ मतिम्, मती, मतीः २ मत्या, मतिभ्याम्, मतिभिः ३ मत्यै, मतये, मतिभ्याम्, मतिभ्यः ४ मत्याः, मतेः, मतिभ्याम्, मतिभ्यः ५ मत्याः, मतेः, मत्योः, मतीनाम् ६ मत्याम्, मतौ, मत्योः मतिषु ७ हे मते ! हे मती, हे मतयः ।

इसी प्रकार धृति, (धीरज) कृति (करना) भृति (नौकरी) नति (प्रणाम) नीति (न्याय) जामि (भगिनी, बहिन) व्रतति (वेल) तति (पङ्क्ति) छवि (शोभा) जग्धि (भोजन) क्षिति (पृथ्वी) क्षति (हानि) यष्टि (लाठी) उष्टि (निवास) गति (चाल) समिति (सभा) प्राप्ति (लाभ) मुष्टि (घूंसा, मुक्का) स्मृति (याददास्त) विस्मृति (भूल) भ्रान्ति (झूँठी समझ) वृत्ति (जीविका) कीर्त्ति (यश) दृष्टि (देखना) कृषि (खेती) प्रतिपत्ति (सिद्धि) विपत्ति (आफत) उपस्थिति (हाजिरी) नीवि (कमरबंध, चुल्लि चुल्ला) पद्धति रास्ता शब्दों के रूप होते हैं ।

(ईकारान्त नदीशब्दः) दरिया ।

नदी, नद्यौ, नद्यः १ नदीम्, नद्यौ, नदीः २ नद्या, नदी-

भ्याम्, नदीभिः ३ नद्यै, नदीभ्याम्, नदीभ्यः ४ नद्याः, नदीभ्याम्, नदीभ्यः ५ नद्याः, नद्योः, नदीनाम् ६ नद्याम् नद्योः, नदीषु ७ हे नदि ! हे नद्यौ हे नद्यः। इसी प्रकार कुटी (कोठरी) मैत्री (दोस्ती) लिपी (छापी) शैली (रीति) श्रेणी (जमात) नारी (स्त्री) सखी (सहेली) कर्त्री (करने वाली) हर्त्री (चुराने वाली) क्रोष्ट्री (शृगाली) पुत्री (लड़की) चोली (अंगिया) देहली (चौखट) महती (बड़ी) महिषी (भैंस) छागी (बकरी) गर्दभी (गदही) शष्कुली (पूड़ी) घृतचौरी (कचौड़ी) तन्त्री (सितार)

(श्री शब्दः) शोभा

श्रीः, श्रियौ, श्रियः १ श्रियम्, श्रियौ, श्रियः २ श्रिया, श्रीभ्याम्, श्रीभिः ३ श्रिये श्रियै, श्रीभ्याम्, श्रीभ्यः ४ श्रियःश्रियाः, श्रीभ्याम्, श्रीभ्यः ५ श्रियःश्रियाः, श्रियोः, श्रियाम् श्रीणाम् ६ श्रियि श्रियाम्, श्रियोः, श्रीषु ७

(स्त्रीशब्दः) नारी

स्त्री, स्त्रियौ, स्त्रियः १ स्त्रियम् स्त्रीम्, स्त्रियौ, स्त्रियः, स्त्रीः२ स्त्रिया, स्त्रीभ्याम् स्त्रीभिः ३ स्त्रियै, स्त्रीभ्याम्, स्त्रीभ्यः ४ स्त्रियाः, स्त्रीभ्याम स्त्रीभ्यः ५ स्त्रियाः स्त्रियोः, स्त्रीणाम् ६ स्त्रियाम्, स्त्रियोः, स्त्रीषु ७ स० हे स्त्रि, हे स्त्रियौ, हे स्त्रियः॥

(उकारान्त धेनुशब्दः) गाय।

धेनुः, धेनू धेनवः १ धेनुम्, धेनू, धेनूः २ धेन्वा, धेनुभ्याम् धेनुभिः ३ धेन्वै, धेनवे, धेनुभ्याम्, धेनुभ्यः ४ धेन्वाः, धेनोः धेनुभ्याम्, धेनुभ्यः ५ धेन्वाः, धेनोः धेन्वोः, धेनूनाम् ६ धेन्वाम्, धेनौ, धेन्वोः, धेनुषु ७ स० हे धेनो ! हे धेनू, हे धेनवः इसी प्रकार रज्जु (रस्सी)।

(ऊकारान्त वधू शब्दः) बहू।

वधूः, वध्वौ, वध्वः १ वधूम् वध्वौ, वधूः २ वध्वा, वधूभ्याम्, वधूभिः, ३ वध्वै, वधूभ्याम्, वधूभ्यः ४ वध्वाः, वधूभ्याम् वधूभ्यः ५ वध्वाः, वध्वोः, वधूनाम् ६ वध्वाम्, वध्वोः, वधुषु ७ स० हे वधु ! हे वध्वौ, हे वध्वः। इसी प्रकार श्वश्रू (सास) भ्रू (भौंह) इस के रूप पु० स्वयम्भू के समान होते हैं अलाबू (तुम्बी) तनू (शरीर) खर्जू (खाज) शब्दों के रूप होते हैं।

(ऋकारान्त दुहितृ शब्दः) लड़की

दुहिता, दुहितरौ, दुहितरः १ दुहितरम्, दुहितरौ, दुहितॄः २ दुहित्रा, दुहितृभ्याम्, दुहितृभिः ३ दुहित्रे, दुहितृभ्याम्, दुहितृभ्यः ५ दुहितुः, दुहित्रोः, दुहितॄणाम्, ६ दुहितरि,

दुहित्रोः, दुहितृषु ७ स० हे दुहितः ! हे दुहितरौ, हे दुहितरः । इसी प्रकार मातृ (मा) ।

(स्वसृ शब्दः) बहिन ।

स्वसा, स्वसारौ, स्वसारः १ स्वसारम् स्वसारौ स्वसृः शेष रूप दुहितृवत्—

(ओकारान्त द्योशब्दः) आकाश ।

द्यौः, द्यावौः, द्यावः १ द्याम्, द्यावौ, द्याः २ द्यवा, द्योभ्याम्, द्योभिः ३ द्यवे, द्योभ्याम्, द्योभ्यः ४ द्योः, द्योभ्याम् द्योभ्यः ५ द्योः, द्यवोः, द्यवाम् ६ द्यवि, द्यवोः, द्यवि ७ ।

(ओकारान्त नौशब्दः) नाव ।

नौः, नावौ, नावः १ नावम्, नावौ नावः २ नावा, नौभ्याम्, नौभिः ३ नावे, नौभ्याम्, नौभ्यः ४ नावः, नौभ्याम्, नौभ्यः ५ नावः, नावोः, नावाम् ६ नावि, नावोः, नौषु ॥

नैर्मल्यम् = पवित्रता । मालिन्यम् = मलिनता । काठिन्यम् = कठिनता । आनुकूल्यम् = अनुकूलता । प्रातिकूल्यम् = प्रतिकूलता । प्राचुर्यम् = बहुतायत । दार्ढ्यम् = मजबूती । नैर्बल्यम् = कमजोरी । पाण्डित्यम् = विद्वत्ता, आलिमपना । मौर्ख्यम् = मूर्खता । वैचित्र्यम् = विचित्रता, अजीबपना ।

वैशिष्ट्यम् = विशेषता । कौशलयम् = कुशलता । कौटिल्यम्-कुटिलता । न्यौनाधिक्यम् = तरमीम । सौकर्यम्=आसानी । वैपरीत्यम् = उलटा । आकास्मिकम् = अचानक । सुषिरम्=घुना हुआ । गर्त्तम्=गड्ढा । विनिमयः = बदला । अभिज्ञानम्=निदर्शन,नमूना । प्रहारः = चोट । विहारः=भ्रमण

इत्यजन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम् ।

अथाजन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम् ।

(सर्वशब्दः) सब

सर्वम्, सर्वे, सर्वाणि १ सर्वम्, सर्वे, सर्वाणि शेष रूप पुंल्लिङ्गवत् ॥

(कतरच्छब्दः) कौन

कतरत् द्, कतरे, कतराणि १ हे कतरत् ! कतरे, कतराणि २ शेषरूप सर्ववत् एवमेव कतमत् इतरत् अन्यत् अन्यतरत् शब्दों के भी रूप होते हैं ॥

(आकारान्त श्रीपा शब्दः) धनपालक ।

श्रीपम्, श्रीपे, श्रीपाणि १, २ शेष रूप पुस्तकवत् ।

(इकारान्त वारिशब्दः) पानी ।

वारि, वारिणी, वारीणि १ वारि, वारिणी, वारीणि २

वारिणा, वारिभ्याम्, वारिभिः ३ वारिणे, वारिभ्याम्, वारिभ्यः ४ वारिणः, वारिभ्याम्, वारिभ्यः ५ वारिणः, वारिणोः, वारीणाम् ६ वारिणि, वारिणोः, वारिषु ७ वारि ! हे वारे ॥

(दधिशब्दः) दही ।

दधि, दधिनी, दधीनि, १ दधि, दधिनी, दधीनि २ दध्ना, दधिभ्याम्, दधिभिः ३ दध्ने, दधिभ्याम्, दधिभ्यः ४ दध्नः, दधिभ्याम् दधिभ्यः ५ दध्नः, दध्नोः दध्नाम् ६ दधनि, दध्नि, दध्नोः, दधिषु ७ इसीप्रकार अस्थि (हाड़) अक्षि (आंख) सक्थि (ऊरू) के रूपहोते हैं और शेष इकारान्त नपुंसक शब्दों के रूप वारिवत् समझो॥

(संस्कृतबनाओ)

मैंने और सबपाठशाला देखी हैं परंतु आपकी पाठशाला कभी भी नहीं देखी। मेरी बुद्धि में तुम्हारी यह बात नहीं आती। क्या वे सब हानि और लाभ को मानते हैं ?। उनकी याददास्त बहुत अच्छी है मैंने कई बार परीक्षा की है। तुमने लाठी उसकी मुष्टि में मारी थी। कमरबन्ध अच्छा नहीं लगता है। नदी में स्त्रियां स्नान करने को जाती हैं। तुम्हारी बहू की अब तबियत कैसी।

(भाषाबनाओ)

भवतो दुहितुः पाणिपीडनं कस्मिन् मासे भविष्यति। अस्माकं मातुरियमाज्ञाऽस्त्यतो वयंगन्तुं न वाञ्छामः। यज्ञदत्तस्य मैत्र्या मदीया महती हानिरभूत्। अनुनयेन लिखामि दलं प्रभो!। गताक्षराणां न शृणोमि वार्त्ताम्। अलीकं नेजकस्येदं कथनं विश्वं मया श्रुतम्।

(उकारान्त मधुशब्दः) शहद।

मधु, मधुनी, मधूनि, १ मधु, मधुनी, मधूनि २ मधुना, मधुभ्याम्, मधुभिः ३ मधुने, मधुभ्याम्, मधुभ्यः, ४ मधुनः मधुभ्याम्, मधुभ्यः ५ मधुनः, मधुनोः, मधूनाम् ६ मधुनि मधुनोः मधुषु ७ स० हे मधु! मधो!, मधुनी, मधूनि॥

(ऋकारान्त धातृ शब्दः)

धातृ धातृणी, धातॄणि १ धातृ, धातृणी, धातॄणि २ धात्रा, धातृणा, धातृभ्याम् धातृभिः ३ धातृणे, धात्रे, धातृभ्याम्, धातृभ्यः ४ धातृणः, धातुः धातृभ्याम्, धातृभ्यः ५ ६ धातृणः, धातुः धातृणोः धात्रोः, धातॄणाम् ६ धातृणि धातरि, धातृणोः, धात्रोः, धातृषु ७ स० हे धातः! हे-धातृ! हेधातृणी! हे धातॄणि।

(प्ररिशब्दः) जिस कुल में अधिक धनहो ॥

प्ररि, प्ररिणी, प्ररीणि १ प्ररि, प्ररिणी, प्ररीणि २ प्ररिणा, प्रराभ्याम्, प्रराभिः ३ प्ररिणे, प्रराभ्याम्, प्रराभ्यः ४ प्ररिणः, प्रराभ्याम्, प्रराभ्यः ५ प्ररिणः, प्ररिणोः, प्ररीणाम् ६ प्ररिणि, प्ररिणोः प्ररिषु ७ स० हे प्ररे, हे प्ररिणी, हे प्ररीणि ॥

इत्यजन्त नपुंसकलिङ्ग प्रकरणम् ॥

अथ हलन्तपुँल्लिङ्ग प्रकरणम् ।

(हान्त लिह् शब्दः) चाटनेवाला ।

लिड् लिट्, लिहौ, लिहः १ लिहम्, लिहौ, लिहः २ लिहा, लिड्भ्याम्, लिड्भिः ३ लिहे, लिड्भ्याम्, लिड्भ्यः ४ लिहः, लिड्भ्याम्, लिड्भ्यः ५ लिहः, लिहोः, लिहाम् ६ लिहि, लिहोः, लिट्सु लिट्त्सु ७ स० हे लिट् हे लिहौ, हे लिहः

(हान्त दुह् शब्दः) दुहनेवाला ।

धुक्, धुग्, दुहौ, दुहः १ दुहम्, दुहौ, दुहः २ दुहा, धुग्भ्याम् धुग्भिः ३ दुहे धुग्भ्याम्, धुग्भ्यः ४ दुहः, धुग्भ्याम्, धुग्भ्यः ५ दुहः, दुहोः दुहाम् ६ दुहि, दुहोः, धुक्षु ७ स० हे धुग्, धुक्, हे दुहौ, हे दुहः ॥

(हान्त द्रुह् शब्दः) द्रोही ।

ध्रुक् ध्रुग् ध्रुट् ध्रुड्, द्रुहौ, द्रुहः, १ द्रुहम्, द्रुहौ, द्रुहः २ द्रुहा, ध्रुग्ड्भ्याम्, ध्रुग्ड्भिः ३ द्रुहे, ध्रुग्-ड्भ्याम्, ध्रुग्ड्भ्यः ४ द्रुहः, ध्रुग्ड्-भ्याम्, ध्रुग्-ड्भ्यः ५ द्रुहः, द्रुहोः, द्रुहाम् ६ द्रुहि, द्रुहोः, ध्रुट्सु ध्रुट्त्सु ध्रुक्षु ७ स० हे ध्रुक् ग्-ट्-ड् हे द्रुहौ, हे द्रुहः । इसीप्रकार मुह (वे सुध होनेवाला) के रूप होतेहैं ॥

(स्नुह्शब्दः) उगलनेवाला।

स्नुक्-ग्-ट्-ड्, स्नुहौ, स्नुहः १ स्नुहम्, स्नुहौ, स्नुहः २ स्नुहा, स्नुग्ड्भ्याम्, स्नुग्ड्-भिः ३ स्नुहे, स्नुग्-ड्-भ्याम्, स्नुग्ड्भ्यः ४ स्नुहः , स्नुग्ड्भ्याम् , स्नुग्ड्भ्यः ५ स्नुहः स्नुहोः, स्नुहाम् ६ स्नुहि, स्नुहोः, स्नुक्षु, स्नुट्त्सु, स्नुट्सु ७ स० हे स्नुक् ग्- ट् ड् हे स्नुहौ, हे स्नुहः इसी प्रकार स्निह् (स्नेहकर्त्ता) शब्द के रूप होते हैं॥

(विश्ववाह्शब्दः) सर्व संसार का धारक ।

विश्ववाट्-ड् विश्ववाहौ, विश्ववाहः १ विश्ववाहम्, विश्ववाहौ, विश्वौहः २ विश्वौहा, विश्ववाड्भ्याम्, विश्ववाड्भिः ३ विश्वौहे, विश्ववाड्भ्याम्, विश्ववाड्भ्यः ४ विश्वौहः, विश्ववाड्भ्याम्, विश्ववाड्भ्यः ५ विश्वौहः, विश्वौहोः,

विश्वौहाम् ६ विश्वौहि, विश्वौहोः, विश्ववाट्त्सु विश्ववाट्सु ७ स० प्रथमावत् ।

(अनडुह् शब्दः बैल ।

अनड्वान्, अनड्वाहौ, अनड्वाहः १ अनड्वाहम्, अनड्वाहौ, अनडुहः २ अनडुहा, अनडुद्भ्याम्, अनडुद्भिः ३ अनडुहे, अनडुद्भ्याम्, अनडुद्भ्यः ४ अनडुहः, अनडुद्भ्याम्, अनडुद्भ्यः, ५ अनडुहः, अनडुहोः, अनडुहाम्, ६ अनडुहि, अनडुहोः, अनडुत्सु ७ स० हे अनड्वन् ! हे अनड्वाहौ, हे अनड्वाहः ॥

(भाषा बनाओ)

भवतोऽस्य शकटस्याऽनड्वाहौ वरं स्तः । भवन्तोऽवलेहं वाञ्छन्ति तर्हि तत्रागच्छन्तु । यदि भवति तेषां विश्वासो न भविष्यति । इयं कस्य पुत्री देहल्यां तिष्ठति युवां जानीथः? अस्माकं कुड्यां तस्कराः प्रविष्टाः सन्ति सत्वरमागन्तु भवन्तः। क्षिताविदानीं यूयं न शेध्वं कुतो वृश्चिका अत्र निर्गच्छन्ति। भवन्तावस्मिन् विषये मह्यं कां सम्मतिं दत्थः । तत्र तृतीयस्मिन् गृहे के गमिष्यन्ति, अहं तु न गच्छामि ।

(संस्कृत बनाओ)

इस समाज का वार्षिक उत्सव कब होगा । आपजानते

हैं धर्म के कामों में विघ्न हुआ ही करते हैं। इस संसारमें हमारी रक्षा करने वाला परमात्मा है। शहद में दही मिलाकर कैसा होता है। आपको इस समय कौन बीमारीहै उसी का इलाज हो। इस शीशी की दवा नई है अथवा पुरानी॥

(तुरासाह् शब्दः) सूर्य, बिजली।

तुराषाट् ड्- तुरासाहौ, तुरासाहः१ तुरासाहम्, तुरासाहौ तुरासाहः २ तुरासाहा, तुराषाड्भ्याम्, तुराषाड्भिः ३ तुरासाहे, तुराषाड्भ्याम्, तुराषाड्भ्यः ४ तुरासाहः तुराषाड्भ्याम्, तुराषाड्भ्यः ५ तुरासाहः, तुरासाहोः, तुरासाहाम् ६ तुरासाहि, तुरासाहोः, तुराषाट्त्सु तुराषाट्सु ७ स० प्रथमावत्

(सुदिव् शब्दः) श्रेष्ठ आकाश।

सुद्यौः, सुदिवौ, सुदिवः, १ सुदिवम् सुदिवौ, सुदिवः २ सुदिवा, सुद्युभ्याम्, सुद्युभिः ३ सुदिवे, सुद्युभ्याम्, सुद्युभ्यः ४ सुदिवः, सुद्युभ्याम्, सुद्युभ्यः ५ सुदिवः, सुदिवोः, सुदिवाम् ६ सुदिवि, सुदिवोः, सुद्युषु ७ सं० प्रथमावत्॥

(रेफान्त चतुर् शब्दः) चार

चत्वारः १ चतुरः २ चतुर्भिः ३ चतुर्भ्यः ४, ५ चतुर्णाम् ६ चतुर्षु ॥ ७॥

(प्रशाम् शब्दः) अतिशान्त ।

प्रशान्,प्रशामौ,प्रशामः १ प्रशामम्, प्रशामौ, प्रशामः २ प्रशामा प्रशान्भ्याम्, प्रशान्भिः ३ प्रशामे प्रशान्भ्याम्, प्रशान्भ्यः ४ प्रशामः, प्रशान्भ्याम्, प्रशान्भ्यः ५ प्रशामः, प्रशामोः, प्रशामाम् ६ प्रशामि, प्रशामोः, प्रशान्सु ७ स० हे प्रशान्! हे प्रशामौ ! हे प्रशामः ॥

(इदम् शब्दः) यह ।

१ अयम्, इमौ, इमे २ इमम्, इमौ, एनौ, इमान् एनान् ३ अनेन एनेन, आभ्याम्, एभिः ४ अस्मै, आभ्याम्, एभ्यः ५ अस्मात्, आभ्याम्, एभ्यः, ६ अस्य, अनयोः, एनयोः एषाम् ७ अस्मिन्, अनयोः एनयोः, एषु ॥

(राजन् शब्दः) राजा

राजा, राजानौ, राजानः १ राजानम् राजानौ, राज्ञः, २ राज्ञा राजभ्याम्, राजभिः ३ राज्ञे, राजभ्याम्, राजभ्यः ४ राज्ञः राजभ्याम्, राजभ्यः ५ राज्ञः, राज्ञोः, राज्ञाम् ६ राज्ञि, राजनि, राज्ञोः, राजसु ७ स० हे राजन् ! हे राजानौ ! हे राजानः ॥

(यज्वन् शब्दः) यज्ञ करनेवाला ।

यज्वा, यज्वानौ, यज्वानः १ यज्वानम्, यज्वानौ,

यज्वन: २ यज्वना, यज्वभ्याम् यज्वभि: ३ यज्वने, यज्वभ्याम्, यज्वभ्य: ४ यज्वन:, यज्वभ्याम्, यज्वभ्य: ५ यज्वन:, यज्वनो:, यज्वनाम् ६ यज्वनि, यज्वनो:, यज्वसु ७ स० हे यज्वन्, हे यज्वानौ, हे यज्वान: ।

इसी प्रकार ब्रह्मन् शब्द के रूप होते हैं ॥

(वृत्रहन् शब्द:) बादल को दूर करनेवाला ।

वृत्रहा, वृत्रहणौ, वृत्रहण: १ वृत्रहणम्, वृत्रहणौ, वृत्रघ्न: २ वृत्रघ्ना, वृत्रहभ्याम्, वृत्रहाभि: ३ वृत्रघ्ने, वृत्रहभ्याम् वृत्रहभ्य: ४ वृत्रघ्न:, वृत्रहभ्याम्, वृत्रहभ्य: ५ वृत्रघ्न:, वृत्रघ्नो:, वृत्रघ्नाम् ६ वृत्रहणि, वृत्रघ्नि, वृत्रघ्नो:, वृत्रहसु ७ स० हे वृत्रहन् हे वृत्रहणौ, हे वृत्रहण: । इसी प्रकार शार्ङ्गिन् (धनुषधारी) यशस्विन् (यशवाला) अर्यमन् (सूर्य) शब्दों के रूप होते हैं ।

(मघवन् शब्द:) सूर्य, बिजली ।

मघवान्, मघवन्तौ, मघवन्त: १ मघवन्तम्, मघवन्तौ, मघवत: २ मघवता, मघवद्भ्याम्, मघवद्भि: ३ मघवते, मघवद्भ्याम् मघवद्भ्य: ४ मघवत:, मघवद्भ्याम्, मघवद्भ्य: ५ मघवत:, मघवतो:, मघवताम् ६ मघवति, मघ-

वतोः, मघवत्सु ७स० हे मघवन् ! हे मघवन्तौ, हे मघवन्तः॥

मघवा, मघवानौ, मघवानः १ मघवानम्, मघवानौ, मघोनः २ मघोना, मघवभ्याम्, मघवभिः ३ मघोने मघवभ्याम्, मघवभ्यः ४ मघोनः, मघवभ्याम् मघवभ्यः ५ मघोनः मघोनोः मघोनाम् ६ मघोनि मघोनोः, मघवसु ७ स० हे मघवन् ! हे मघवानौ, हे मघवानः ॥

(युवन् शब्दः) जवान ।

युवा, युवानौ, युवानः १ युवानम्, युवानौ यूनः २ यूना युवभ्याम्, युवभिः ३ यूने, युवभ्याम्, युवभ्यः ४ यूनः, युवभ्याम्, युवभ्यः ५ यूनः, यूनोः, यूनाम् ६ यूनि, यूनोः युवसु ७ स० हे युवन् ! हे युवानौ, हे युवानः ॥

(अर्वन् शब्दः) घोड़ा ।

अर्वा, अर्वन्तौ, अर्वन्तः १ अर्वन्तम्, अर्वन्तौ, अर्वतः २ अर्वता, अर्वद्भ्यम्, अर्वद्भिः ३ अर्वते, अर्वद्भ्याम्, अर्वद्भ्यः ४ अर्वतः, अर्वद्भ्याम् अर्वद्भ्यः ५ अर्वतः, अर्वतोः, अर्वताम् ६ अर्वति, अर्वतोः अर्वत्सु ७ स हे अर्वन् हे अर्वन्तौ, हे अर्वन्तः ॥

प्राची = पूर्व, मशरक़ । प्रतीची = पश्चिम, मगरब ।

उदीची = उत्तर, शुमाल । अवाचा = दक्षिण, जनूब । आग्नेयी = पूर्व और दक्षिण के बीचकी दिशा । नैर्ऋती = दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा । वायवी = पश्चिम और उत्तरके बीचकी दिशा। ऐशानी = उत्तर और पूर्व के बीच की दिशा। राजकीयम् = सरकारी। यौष्माकीणम् = तुम्हारा । आस्माकीनम् = हमारा । तावकीनम् = तेरा । मामकीनम् = मेरा । सायन्तनम् = शामका । प्रातस्तनम् = सुबह का । श्वस्तनम् = आगामी कलका । ह्यस्तनम् = गयेकलका । दोषातनम् = रात्रिका । ईषद्धसनम् = मुसकराना । परिसर्गः = लपेटना । परिष्कारः = सजावट मार्जनम् = शुद्ध करना ।

(पथिन् शब्दः) मार्ग ।

पन्थाः, पन्थानौ, पन्थानः १ पन्थानम्, पन्थानौ, पथः २ पथा, पथिभ्याम्, पथिभिः ३ पथे, पथिभ्याम्, पथिभ्यः ४ पथः, पथिभ्याम्, पथिभ्यः ५ पथः, पथोः, पथाम् ६ पथि, पथोः, पथिषु ७ इसी प्रकार मथिन् (बिलोने वाला) ऋभुक्षिन् (अन्तरिक्ष) शब्दों के रूप जानो ॥

(नान्त[1] पञ्चन् शब्दः) पांच ।

पञ्च १ पञ्च २ पञ्चभिः ३ पञ्चभ्यः ४, ५ पञ्चानाम्

---

१ पञ्चन्, सप्तन्, अष्टन्, नवन्, दशन् शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में सम होते हैं ॥

६ पञ्चसु ७ इसी प्रकार सप्तन् (सात) नवन् (नौ) दशन् (दस) शब्दों के रूप होते हैं।

(अष्टन् शब्दः) आठ।

अष्टौ, अष्ट १ अष्टौ, अष्ट २ अष्टभिः, अष्टाभिः ३ अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः ४ अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः ५ अष्टानाम् ६ अष्टसु, अष्टासु ७ ॥

(ऋत्विज् शब्दः) हवनकर्त्ता।

ऋत्विक्,-ग्, ऋत्विजौ, ऋत्विजः १ ऋत्विजम्, ऋत्विजौ, ऋत्विजः २ ऋत्विजा, ऋत्विग्भ्याम्, ऋत्विग्भिः ३ ऋत्विजे, ऋत्विग्भ्याम्, ऋत्विग्भ्यः ४ ऋत्विजः, ऋत्विग्भ्याम्, ऋत्विग्भ्यः, ५ ऋत्विजः, ऋत्विजोः, ऋत्विजाम् ६ ऋत्विजि, ऋत्विजोः, ऋत्विक्षु ७ स० प्रथमावत्।

(भाषा बनाओ)

एभिर्बालकैरिदानीं जलं न पीतम् पीत्वाऽऽगमिष्यन्ति। आस्माकीना वडवा प्राच्यां गतोदीच्यां वा। वयमिदानीं प्रतीच्या आगच्छामोऽतो न जानीमः। ह्यस्तनं तावकीनं किं कार्यमस्ति। सायन्तनस्य कार्यस्य स्मृतिरस्ति नास्ति वा?। नगरस्यैशान्यां मुरादाबादस्य राजकीया महती पाठशालास्ति।

(संस्कृत बनाओ)

ये किस राजके घोड़े हैं क्या आप जानते हैं? । यह तुम्हारे आठ दिनका काम है या दशका? । इस वनमें चार रास्ते हैं इस लिये मैं किस रास्ते से जाऊँ । तुम सब आठ आदमियों में से युद्धके लिये कौन जायगा । जवानोंका काम जवान ही करते हैं लड़के नहीं करते ।

(युज् शब्दः) मिलनेवाला ।

युङ्, युञ्जौ, युञ्जः १ युञ्जम्, युञ्जौ, युजः २ युजा, युग्भ्याम्, युग्भिः ३ युजे, युग्भ्यम्, युग्भ्यः ४ युजः, युग्भ्याम्, युग्भ्यः ५ युजः, युजोः, युजाम् ६ युजि, युजोः, युक्षु ७ स० प्रथमावत् ॥

(सुयुज् शब्दः) सम्यग् मिला हुआ)

सुयुक् ग् सुयुजौ, सुयुजः १ सुयुजम्, सुयुजौ, सुयुजः २ सुयुजा, सुयुग्भ्याम्, सुयुग्भिः ३ सुयुजे, सुयुग्भ्याम्, सुयुग्भ्यः ४ सुयुजः सुयुग्भ्याम्, सुयुग्भ्यः ५ सुयुजः, सुयुजोः, सुयुजाम् ६ सुयुजि, सुयुजोः, सुयुक्षु ७ स० प्रथमावत् ॥

(खञ्ज् शब्दः) लूला ।

खन, खञ्जौ, खञ्जः १ खञ्जम्, खञ्जौ, खञ्जः १

खञ्जा, खन्भ्याम्, खन्भिः ३ खञ्जे, खन्भ्याम्, खन्भ्यः ४ खञ्जः, खन्भ्याम्, खन्भ्यः ५ खञ्जः, खञ्जोः, खञ्जाम् ६ खञ्जि, खञ्जोः खन्सु ७ स० प्रथमावत् ॥

(विश्वराज् शब्दः) ईश्वर ।

विश्वाराट्-ड्, विश्वराजौ, विश्वराजः १ विश्वराजम्, विश्वराजौ, विश्वराजः २ विश्वराजा, विश्वराड्भ्याम्, विश्वाराड्भिः ३ विश्वराजे, विश्वाराड्भ्याम्, विश्वाराड्भ्यः ४ विश्वराजः, विश्वाराड्भ्याम्, विश्वाराड्भ्य ५ विश्वराजः विश्वराजोः, विश्वराजाम् ६ विश्वराजि, विश्वराजोः, विश्वाराट्त्सु, विश्वाराट्सु ७ स० प्रथमावत् ॥

(भृस्ज् शब्दः) भून)(ज)ना

भृट्-ड्, भृज्जौ, भृज्जः १ भृज्जम्, भृज्जौ, भृज्जः २ भृज्जा, भृड्भ्याम्, भृड्भिः ३ भृज्जे, भृड्भ्याम्, भृड्भ्यः ४ भृज्जः, भृड्भ्याम् भृड्भ्यः ५ भृज्जः, भृज्जोः, भृज्जाम् ६ भृज्जि, भृज्जोः, भृट्त्सु भृट्सु ७ स० प्रथमावत् ॥

(त्यद् शब्दः) वह ।

स्यः, त्यौ, त्ये, १ त्यम्, त्यौ, त्यान् २ त्येन, त्याभ्याम्, त्यैः ३ त्यस्मै, त्याभ्याम्, त्येभ्यः ४ त्यस्मात्, त्याभ्याम्,

त्येभ्यः ५ त्यस्य, त्ययोः त्येषाम् ६ त्यस्मिन्, त्ययोःत्येषु

(एतद् शब्दः) यह

एषः, एतौ, एते, १ एतम् एनम्, एतौ एनौ, एतान् एनान् २ एतेन एनेन, एताभ्याम्, एतैः ३ एतस्मै, एताभ्याम्, एतेभ्यः ४ एतस्मात्, एताभ्याम्, एतेभ्यः ५ एतस्य, एतयोः एनयोः एतेषाम् ६ एतस्मिन, एतयोः एनयोः, एतेषु ७

(सुपाद् शब्दः) अच्छे पैर वाला

सुपाद्-त्, सुपादौ सुपादः १ सुपादम्, सुपादौ सुपदः २ सुपदा, सुपाद्भ्याम्, सुपाद्भिः ३ सुपदे, सुपाद्भ्याम्, सुपाद्भ्यः ४ सुपदः, सुपाद्भ्याम्, सुपाद्भ्यः, ५ सुपदः सुपदोः, सुपदाम् ६ सुपादि, सुपदोः, सुपात्सु ७ सं० प्रथमावत्॥

(अग्निमथ् शब्दः) अग्नि मथने वाला।

अग्निमद्-त्, अग्निमथौ, अग्निमथः १ अग्निमथम्, अग्निमथौ, अग्निमथः २ अग्निमथा अग्निमद्भ्याम्, अग्निमद्भिः ३ अग्निमथे, अग्निमद्भ्याम्, अग्निमद्भ्यः ४ अग्निमथः, अग्निमद्भ्याम्, अग्निमद्भ्यः ५ अग्निमथः अग्निमथोः, अग्निमथाम् ६ अग्निमथि, अग्निमथोः, अग्निमत्सु ७

(प्राञ्च् शब्दः) पूर्वदिशा।

प्राङ्, प्राञ्चौ, प्राञ्चः १ प्राञ्चम्, प्राञ्चौ, प्राचः २ प्राचा, प्राग्भ्याम्, प्राग्भिः ३ प्राचे, प्राग्भ्याम्, प्राग्भ्यः, ४ प्राचः, प्राग्भ्याम्, प्राग्भ्यः ५ प्राचः, प्राचोः, प्राचाम् ६ प्राचि, प्राचोः प्राक्षु ७ स प्रथमावत् ॥

(प्रत्यञ्च् शब्दः) उत्तर दिशा

प्रत्यङ्, प्रत्यञ्चौ, प्रत्यञ्चः १ प्रत्यञ्चम्, प्रत्यञ्चौ, प्रतीचः २ प्रतीचा, प्रत्यग्भ्याम्, प्रत्यग्भिः ३ प्रतीचे, प्रत्यग्भ्याम्, प्रत्यग्भ्यः ४ प्रतीचः, प्रत्यग्भ्याम्, प्रत्यग्भ्यः ५ प्रतीचः, प्रतीचोः, प्रतीचाम् ६ प्रतीचि, प्रतीचोः, प्रत्यक्षु ७ स० प्रथमावत्।

(उदञ्च्शब्दः) उत्तरदिशा

उदङ्, उदञ्चौ, उदञ्चः १ उदञ्चम्, उदञ्चौ, उदीचः २ उदीचा, उदग्भ्याम्, उदग्भिः ३ उदीचे, उदग्भ्याम्, उदग्भ्यः ४ उदीचः उदग्भ्याम्, उदग्भ्यः ५ उदीचः उदीचोः, उदीचाम् ६ उदीचि, उदीचोः, उदक्षु ७ स० प्रथमावत् ॥

(सम्यञ्च्शब्दः) मनोहर

सम्यङ्, सम्यञ्चौ, सम्यञ्चः १ सम्यञ्चम्, सम्यञ्चौ, समीचः २ समीचा, सम्यग्भ्याम्, सम्यग्भिः ३ समीचे,

सम्यग्भ्याम्, सम्यग्भ्यः ४ समीचः सम्यग्भ्याम्, सम्यग्भ्यः ५ समीचः, समीचोः, समीचाम् ६ समीचि, समीचोः सम्यक्षु ७ स० प्रथमावत् ॥

(सध्र्यञ्च् शब्दः) साथ चलनेवाला

सध्र्यङ्, सध्र्यञ्चौ, सध्र्यञ्चः १ सध्र्यञ्चम्, सध्र्यञ्चौ, सध्रीचः २ सध्रीचा, सध्र्यग्भ्याम्, सध्र्यग्भिः ३ सध्रीचे, सध्र्यग्भ्याम्, सध्र्यग्भ्यः ४ सध्रीचः सध्र्यग्भ्याम्, सध्र्यग्भ्यः ५ सध्रीचः, सध्रीचोः, सध्रीचाम् ६ सध्रीचि, सध्रीचोः, सध्र्यक्षु ७ स० प्रथमावत् ॥

(तिरसञ्च् शब्दः) तिरछी चालवाला ।

तिर्यङ्, तिर्यञ्चौ, तिर्यञ्चः १ तिर्यञ्चम्, तिर्यञ्चौ, तिरश्चः २ तिरश्चा, तिर्यग्भ्याम्, तिर्यग्भिः ३ तिरश्चे, तिर्यग्भ्याम्, तिर्यग्भ्यः ४ तिरश्चः, तिर्यग्भ्याम्, तिर्यग्भ्यः ५ तिरश्चः, तिरश्चोः तिरश्चाम् ६ तिरश्चि, तिरश्चोः, तिर्यक्षु ७ स० प्रथमावत् ।

(प्राञ्च् शब्दः) पूजावाचक ।

प्राङ्, प्राञ्चौ, प्राञ्चः १ प्राञ्चम्, प्राञ्चौ, प्राञ्चः २ प्राञ्चा, प्राङ्भ्याम्, प्राङ्भिः ३ प्राञ्चे, प्राङ्भ्याम् प्राङ्भ्यः ४ प्राञ्चः,

माङ्भ्याम्, माङ्भ्यः ५ माञ्चः, माञ्चोः माञ्चाम् ६ माञ्चि माञ्चोः माङ्षु-माङ्क्षु ७ स० प्रथमावत् ॥

(क्रुञ्च् शब्दः) तिरछा चलनेवाला ।

क्रुङ्, क्रुञ्चौ, क्रुञ्चः १ क्रुञ्चम्, क्रुञ्चौ, क्रुञ्चः २ क्रुञ्चा, क्रुङ्भ्याम्, क्रुङ्भिः ३ क्रुञ्चे, क्रुङ्भ्याम्, क्रुङ्भ्यः ४ क्रुञ्चः, क्रुङ्भ्याम्, क्रुङ्भ्यः ५ क्रुञ्चः, क्रुञ्चोः, क्रुञ्चाम् ६ क्रुञ्चि, क्रुञ्चोः, क्रुङ्षु क्रुङ्क्षु ७ स० प्रथमावत् ॥

लवपुरम् = लाहौर । जयपुरम् = जयपुर । योधपुरम् = जोधपुर । उदयपुरम् = उदयपुर । लक्ष्मणपुरम् = लखनौ । पुरुषपुरम् = पेशावर । कर्णपुरम् = कानपुर । वाराणसी = बनारस । प्रयागः = इलाहाबाद । कालिकता = कलकत्ता । मुम्बापुरी = बम्बई । मयराष्ट्रम् = मेरठ । अजमीढः = अजमेर । सुघ्नः = आगरा । पाटलिपुत्रम् = पटना । अवन्तिपुरी = उज्जैन । कृष्णपुरी = मथुरा ॥

(पयोमुच् शब्दः) बादल ।

पयोमुक्-ग्, पयोमुचौ, पयोमुचः १ पयोमुचम्, पयोमुचौ, पयोमुचः २ पयोमुचा, पयोमुग्भ्याम्, पयोमुग्भिः ३ पयोमुचे, पयोमुग्भ्याम्, पयोमुग्भ्यः ४ पयोमुचः, पयोमु-

भ्याम्, पयोमुग्भ्यः ५ पयोमुचः, पयोमुचोः, पयोमुचाम् ६ पयोमुचि, पयोमुचोः पयोमुक्षु ७ स० प्रथमावत् ॥

(महत् शब्दः) बड़ा ।

महान्, महान्तौ, महान्तः १ महान्तम्, महान्तौ, महतः २ महता, महद्भ्याम्, महद्भिः ३ महते, महद्भ्याम्, महद्भ्यः ४ महतः, महद्भ्याम्, महद्भ्यः ५ महतः महतोः, महताम् ६ महति, महतोः, महत्सु ७ स० हे महन् ! हे महान्तौ, हे महान्तः ।

(ददत् शब्दः) देता हुआ

ददत्, ददतौ, ददतः १ ददतम्, ददतौ, ददतः २ ददता, ददद्भ्याम्, ददद्भिः ३ ददते, ददद्भ्याम्, ददद्भ्यः ४ ददतः, ददद्भ्याम्, ददद्भ्यः ५ ददतः, ददतोः, ददताम् ६ ददति, ददतोः ददत्सु ७ स० प्रथमावत् इसी प्रकार जक्षत् (खाताहुआ) जाग्रत् (जागताहुआ)

दरिद्रत् (कंगाल होताहुआ) शासत् (शिक्षा करताहुआ) चकाशत् (प्रकाश करता हुआ) के रूप होते हैं

(तादृश शब्दः) तैसा

तादृक्-ग्, तादृशौ, तादृशः १ तादृशम्, तादृशौ, तादृशः

२ तादृशा, तादृग्भ्याम्, तादृग्भिः ३ तादृशे, तादृग्भ्याम्, तादृग्भ्यः ४ तादृशः तादृग्भ्याम्, तादृग्भ्यः ५ तादृशः, तादृशोः, तादृशाम् ६ तादृशि, तादृशोः, तादृक्षु ७ स० प्रथमावत्

(विश् शब्दः) प्रवेशकर्त्ता

विट्-विड्, विशौ, विशः १ विशम् विशौ, विशः २ विशा, विड्भ्याम्, विड्भिः ३ विशे, विड्भ्याम्, विड्भ्यः ४ विशः, विड्भ्याम्, विड्भ्यः ५ विशः विशोः, विशाम् ६ विशि, विशोः, विट्त्सु, विट्सु ७ स० प्रथमावत् ॥

(नश्शब्दः) नाशवान्

नक्-ग्, ट् ड्, नशौ, नशः १ नशम्, नशौ, नशः २ नशा, नड्-ग्भ्याम्, नड्-ग्भिः ३ नशे, नड्-ग्भ्याम्, नड्-ग्भ्यः ४ नशः नड्-ग्भ्याम्, नड्-ग्भ्यः ५ नशः, नशोः नशाम् ६ नशि, नशोः, नक्षु, नट्त्सु-नट्सु ७ स० प्रथमावत्

(भाषा बनाओ)

युष्माकं युञ्जः खञ्जः सन्ति । एते राजानो विश्वराजि विश्वासं कुर्वन्ति । तस्मै सुपदे नमोऽस्तु मे । एतस्याऽग्निमथो भूज्जः पात्रं वरं नास्ति । भवतस्तरवो नगरात् प्राचि प्रतीचि उदीचि वा दिशि सन्ति । तिरश्चां कुटिला गतिः । यादृक् करणं तादृक् भरणम् मितीश्वरीयानियमः ।

(षष् शब्दः) छः

षट्-ड् १ षट्-ड् २ षड्भिः ३ षड्भ्यः, षड्भ्यः ५ षण्णाम् ६ षट्त्सु, षट्सु ७

(पिपठिस् शब्दः) पढ़ने की इच्छा करनेवाला

पिपठीः, पिपठिषौ, पिपठिषः, १ पिपठिषम्, पिपठिषौ पिपठिषः २ पिपठिषा, पिपठीर्भ्याम्, पिपठीर्भिः ३ पिपठिषे, पिपठीर्भ्याम्, पिपठीर्भ्यः ४ पिपठिषः, पिपठीर्भ्याम्। पिपठीर्भ्यः५ पिपठिषः, पिपठिषोः, पिपठिषाम् ६ पिपठिषि, पिपठिषोः, पिपठीःषु-ष्षु ७ सं० प्रथमावत् ॥

(चिकीर्ष् शब्दः) करनेकी इच्छा करनेवाला।

चिकीः, चिकीर्षौ, चिकीर्षः १ शेष रूप पिपठिष्वत् ॥

(विद्वस् शब्दः) आलिम।

विद्वान, विद्वांसौ, विद्वांसः१ विद्वांसम्, विद्वांसौ, विदुषः२ विदुषा, विद्वद्भ्याम्, विद्वद्भिः ३ विदुषे, विद्वद्भ्याम्, विद्वद्भ्यः ४ विदुषः, विद्वद्भ्याम्, विद्वद्भ्यः ५ विदुषः विदुषोः विदुषाम् ६ विदुषि, विदुषोः विद्वत्सु ७ हे विद्वन्! हे विद्वांसौ, हे विद्वांसः ॥

(पुंस् शब्दः) पुरुष।

पुमान्, पुमांसौ, पुमांसः १ पुमांसम्, पुमांसौ, पुंसः २

पुंसा, पुंभ्याम्, पुंभिः ३ पुंसे, पुंभ्याम्, पुंभ्यः ४ पुंसः, पुंभ्याम्, पुंभ्यः ५ पुंसः, पुंसोः, पुंसाम् ६ पुंसि, पुंसोः, पुंसु ७ हे पुमन्, हे पुमांसौ, हे पुमांसः ।

(उशनस् शब्दः) शुक्र ।

उशना, उशनसौ, उशनसः १ उशनसम्, उशनसौ, उशनसः २ उशनसा, उशनोभ्याम्, उशनोभिः ३ उशनसे, उशनोभ्याम्, उशनोभ्यः ४ उशनसः, उशनोभ्याम्, उशनोभ्यः ५ उशनसः उशनसोः, उशनसाम् ६ उशनसि, उशनसोः, उशनस्सु ७ स० हे उशनन्—उशनः—उशन, हे उशनसौ, हे उशनसः ॥

(अनेहस् शब्दः) समय

अनेहा, अनेहसौ, अनेहसः १ अनेहसम्, अनेहसौ, अनेहसः २ अनेहसा, अनेहोभ्याम्, अनेहोभिः ३ अनेहसे, अनेहोभ्याम्, अनेहोभ्यः ४ अनेहसः, अनेहोभ्याम्, अनेहोभ्यः ५ अनेहसः, अनेहसोः, अनेहसाम्, ६ अनेहसि, अनेहसोः, अनेहस्सु, ७ स० हे अनेहः! हे अनेहसौ, हे अनेहसः

(वेधस् शब्दः) विधाता

वेधाः, वेधसौ, वेधसः १ शेषरूप अनेहस्वत् ॥

(अदस् शब्दः) वह

असौ, अमू, अमी १ अमुम्, अमू, अमून् २ अमुना, अमूभ्याम्, अमीभिः ३ अमुष्मै, अमूभ्याम्, अमीभ्यः ४ अमुष्मात्, अमूभ्याम्, अमीभ्यः ५ अमुष्य, अमुयोः अमीषाम् ६ अमुष्मिन्, अमुयोः, अमीषु ७ ॥

(धनिन् शब्दः) धनवान्

धनी, धनिनौ, धनिनः १ धनिनम्, धनिनौ, धनिनः २ धनिना, धनिभ्याम्, धनिभिः ३ धनिने, धनिभ्याम्, धनिभ्यः ४ धनिनः, धनिभ्याम्, धनिभ्यः ५ धनिनः, धनिनोः, धनिनाम् ६ धनिनि, धनिनोः, धनिषु ७ स० हे धनिन् ! हे धनिनौ हे धनिनः

(क्वसु प्रत्ययान्त तस्थिवस् शब्दः) ठहरा हुआ ।

तस्थिवान्, तस्थिवांसौ, तस्थिवांसः १ तस्थिवांसम्, तस्थिवांसौ, तस्थुषः २ तस्थुषा, तस्थिवद्भ्याम्, तस्थिवद्भिः ३ तस्थुषे, तस्थिवद्भ्याम्, तस्थिवद्भ्यः ४ तस्थुषः, तस्थिवद्भ्याम्, तस्थिवद्भ्यः ५ तस्थुषः, तस्थुषोः, तस्थुषाम् ६ तस्थुषि, तस्थुषोः, तस्थिवत्सु ७ स० हे तस्थिवन् ! ॥

(शुश्रुवस् शब्दः) सुनता हुआ

शुश्रुवान्, शुश्रुवांसौ, शुश्रुवांसः १ शुश्रुवांसम्, शुश्रुवां-

सौ, शुश्रुवुषः २ शुश्रुवुषा, शुश्रुवद्भ्याम्, शुश्रुवद्भिः ३ शुश्रुवुषे, शुश्रुवद्भ्याम्, शुश्रुवद्भ्यः ४ शुश्रुवुषः, शुश्रुवद्भ्याम्, शुश्रुवद्भ्यः ५ शुश्रुवुषः, शुश्रुवुषोः, शुश्रुवुषाम् ६ शुश्रुवुषि शुश्रुवुषोः, शुश्रुवत्सु ७ । स० हे शुश्रुवन् ! ॥

इति हलन्तपुँल्लिङ्गप्रकरणम् ॥

बलिष्ठः = बहुतबलवान् । कनिष्ठः = छोटा । घनिष्ठः = बहुत गाढा । दविष्ठम् = बहुतदूर । पटिष्ठः = बहुतचतुर । धर्मिष्ठः = बहुत धर्मात्मा । पापिष्ठः = बडा पापी । भूयिष्ठम् = बहुतही । हस्ताक्षेपः = दस्तन्दाजी ॥

अथ हलन्तस्त्रीलिङ्ग प्रकरणम् ।

(हान्त उपानह् शब्दः) जूता

उपानत्, द् उपानहौ, उपानहः १ उपानहम्, उपानहौ, उपानहः २ उपानहा, उपानद्भ्याम्, उपानद्भिः ३ उपानहे उपानद्भ्याम्, उपानद्भ्यः ४ उपानहः, उपानद्भ्याम्, उपानद्भ्यः ५ उपानहः, उपानहोः, उपानहाम् ६ उपानहि, उपानहोः, उपानत्सु ७ स० प्रथमावत ॥

(हान्त उष्णिह् शब्दः)

उष्णिक्, ग्, उष्णिहौ, उष्णिहः १ उष्णिहम्, उष्णिहौ,

उष्णिहः २ उष्णिहा, उष्णिग्भ्याम्, उष्णिग्भिः ३ उष्णिहे उष्णिग्भ्याम्, उष्णिग्भ्यः ४ उष्णिहः, उष्णिग्भ्याम्, उष्णिग्भ्यः ५ उष्णिहः, उष्णिहोः, उष्णिहाम् ६ उष्णिहि, उष्णिहोः, उष्णिक्षु ७ सं० प्रथमावत् ।

(वान्तो दिव् शब्दः) आकाश

द्यौः, दिवौ, दिवः १ दिवम्, दिवौ, दिवः २ दिवा, द्युभ्याम्, द्युभिः ३ दिवे, द्युभ्याम्, द्युभ्यः ४ दिवः, द्युभ्याम्, द्युभ्यः ५ दिवः दिवोः, दिवाम् ६ दिवि, दिवोः द्युषु

(रेफान्तो गिर् शब्दः) वचन

गीः, गिरौ, गिरः १ गिरम्, गिरौ, गिरः २ गिरा, गीर्भ्याम्, गीर्भिः ३ गिरे, गीर्भ्याम् गीर्भ्यः ४ गिरः, गीर्भ्याम्, गीर्भ्यः ५ गिरः, गिरोः, गिराम् ६ गिरि, गिरोः, गीर्षु ॥ एवं 'पुर्' शब्दस्यरूपाणि विज्ञेयानि ॥

(रेफान्तश्चतुर् शब्दः) चार

चतस्रः १ चतस्रः २ चतसृभिः ३ चतसृभ्यः ४ चतसृभ्यः ५ चतसृणाम् ६ चतसृषु ॥

(मान्तः किम् शब्दः) कौन

का, के, काः १ काम्, के, काः २ कया, काभ्याम्,

काभिः ३ कस्यै, काभ्याम्, काभ्यः ४ कस्याः, काभ्याम्, काभ्यः ५ कस्याः, कयोः, कासाम् ६ कस्याम्, कयोःकासु॥

(मान्त इदम्शब्दः) यह

इयम्, इमे, इमाः १ इमाम्, एनाम् इमे, एने इमाः एनाः २ अनया, एनया आभ्याम्, आभिः ३ अस्यै, आभ्याम्, आभ्यः ४ अस्याः आभ्याम्, आभ्यः ५ अस्याः, अनयोः, एनयोः आसाम् ६ अस्याम्, अनयोः, एनयोः आसु।

(दान्तस्त्यद् शब्दः)

स्या, त्ये, त्याः १ त्याम्, त्ये, त्याः २ त्यया, त्याभ्याम्, त्याभिः ३ त्यस्यै, त्याभ्याम्, त्याभ्यः ४ त्यस्याः, ताभ्याम्, त्याभ्यः ५ तस्याः, तयोः, त्यासाम् ६ त्यस्याम्, त्ययोः, त्यासु ॥ एव मेव तद् यद् एतद् शब्दानां रूपाणि बोध्यानि ॥

(चान्तः वाच्शब्दः) वाणी

वाक्, ग्, वाचौ, वाचः १ वाचम्, वाचौ, वाचः २ वाचा, वाग्भ्याम्, वाग्भिः ३ वाचे, वाग्भ्याम्, वाग्भ्यः ४ वाचः, वाग्भ्याम, वाग्भ्यः ५ वाचः वाचोः, वाचाम् ६ वाचि, वाचोः वाक्षु ॥

(पान्तोऽप् शब्दः) जल

आपः १ अपः २ अद्भिः ३ अद्भ्यः ४ अद्भ्यः ५ अपाम् ६ अप्सु ७ ॥

(शान्तोदिश् शब्दः) दिशा

दिक्, ग्, दिशौ, दिशः १ दिशम्, दिशौ, दिशः २ दिशा, दिग्भ्याम्, दिग्भिः ३ दिशे दिग्भ्याम्, दिग्भ्यः ४ दिशः दिग्भ्याम्, दिग्भ्यः ५ दिशः, दिशोः, दिशाम् ६ दिशि, दिशोः, दिक्षु ॥

(भाषा बनाओ)

भवतेयमुपानत् कियतामूल्येन क्रीता ? । तिसृभिर्मुद्राभिः । द्यौः शान्तिः । चतस्रोऽवस्था शरीरस्य वृद्धिर्यौवनं सम्पूर्णता किञ्चित्परिहाणिश्चेति । अद्यस्त्रीसमाजे कासांकासां विदुषीनामबलानां व्याख्यानानि भविष्यन्ति ? । श्रीमत्याः सरलादेव्याः सावित्रीदेव्याः प्रियंवदायाश्च । वाचमुवाचकौत्सः । अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति । चतसृषुदिक्षु परिभ्रम्य समागतोऽहम् ॥

(संस्कृत बनाओ)

आपने यह जूता कितने में लिया है । चार रुपये में । हे

परमात्मन् ! आशाक शान्तिमय हो । देहकी चार दशा होतीहैं वृद्धियौवन सम्पूर्णता और चतुर्थी ह्रासयुक्त । आज-महिला परिषद् में किन २ विदुषी स्त्रियोंके व्याख्यान होंगे?। श्रीमती सरलादेवी सावित्रीदेवी और प्रियंवदाजीके । जल से शरीरके अवयव शुद्ध होतेहैं । चारों दिशामें घूमकर आयाहूं॥

(शान्तो दृश्शब्दः) देखना ।

दृक्, ग्, दृशौ, दृशः १ दृशम्, दृशौ दृशः २ दृशा दृग्भ्याम्, दृग्भिः ३ दृशे दृग्भ्याम्, दृग्भ्यः ४ दृशः दृग्भ्याम्, दृग्भ्यः ५ दृशः, दृशोः, दृशाम् दृशि, दृशोः, दृक्षु ॥

(षान्तस्त्विष्शब्दः) प्रकाश

त्विट्, ड् त्विषौ, त्विषः १ त्विषम् त्विषौ, त्विषः २ त्विषा, त्विड्भ्याम्, त्विड्भिः ३ त्विषे त्विड्भ्याम्, त्विड्भ्यः ४ त्विषः त्विड्भ्याम्, त्विड्भ्यः ५ त्विषः, त्विषोः त्विषाम् ६ त्विषि त्विषोः त्विटत्सु, त्विट्सु ॥

(षान्तः सजुष् शब्दः) साथमें ॥

सजूः, सजुषौ, सजुषः १ सजुषम्, सजुषौ, सजुषः २ सजुषा, सजूर्भ्याम्, सजूर्भिः ३ सजुषे, सजूर्भ्याम्, सजूर्भ्यः ४ सजुषः, सजूर्भ्याम्, सजूर्भ्यः ५ सजुषः सजुषोः सजुषाम् ६ सजुषि सजुषोः सजूःषु, ष्षु ॥ एवमाशीः ॥

(सान्तोऽदस्शब्दः) बहु

असौ, अमू, अमूः १ अमूम्, अमू, अमूः २ अमुया, अमूभ्याम्, अमूभिः ३ अमुष्यै, अमूभ्याम्, अमूभ्यः ४ अमुष्याः, अमूभ्याम्, अमूभ्यः ५ अमुष्याः, अमुयोः, अमूषाम् ६ अमुस्याम्, अमुयोः, अमूषु ॥

इतिहलन्त स्त्रीलिङ्गप्रकरणम् ॥

सहृदयः=दयालु प्रवणः = चतुष्पथ, चौराहा। धावल्यम्= सफेदी। अधीरः = भीरुः। कथङ्कारम् = क्यों। अङ्कः = गोद। साधुवादः = मुबारिकबादी। शुभसंवादः = खुशखबरी। क्षुभितः = व्याकुल। हर्षः = खुशी। विषादः = रंज प्रणिपातः = अदब। प्रकम्पनम् = कांपना। चङ्क्रमणम् = बार२घूमना। तोलनम् = तोलना। मापनम् = नापना। प्रभातम् = प्रातःकाल, सुबह। प्रवरः = श्रेष्ठ, अच्छा।

भाषावनाओ ॥

सहृदयानांमित्राणामुपदेशं हृदि धारयामि। चतुष्पथे सन्ति न वञ्चकास्ते। ददामि साधुवादांस्ते। कीदृशः शुभसंवादः श्रोतुमिच्छामि भोसखे! हर्षविषादौ कथङ्कारं भवतः। अभूत्सनम्रः प्रणिपातशिक्षया। विषं चङ्क्रमणं रात्रौ। प्रभातं

मभूतं तमस्तद्गतम् । वचस्तत्र प्रयोक्तव्यं यत्रोक्तेलभते फलम् । मद्यपानां मांसाशकानां च बुद्धिर्विपरीता भवति, अत एव बुद्धिमद्भिराभ्यां दूरंस्थेयम् ।

संस्कृतबनाओ ॥

मेहरबानमित्रों के उपदेशको हृदयमें धारण करताहूं । बेवञ्चक चौराहेपर नहींहैं । आपकेलिये मुबारिकवादीः देताहूं हे मित्र ! कैसी खुशखबरी है उसको सुनना चाहताहूं । हर्ष विषाद क्यों होता है ? पक्षपातकी शिक्षासे वह नम्र हुआ ॥

अथ हलन्त नपुंसकलिङ्गप्रकरणम् ।

(स्वनडुह् शब्दः) सुन्दर बैल वाला कुल ।

स्वनडुद्-त्, स्वनडुही, स्वनड्वांहि १ स्वडुद् त्, स्वनडुही, स्वनड्वांहि १ ॥ *

(वार् शब्दः) जल

वाः, वारी, वारि ! वाः, वारी, वारि २ वारा, वार्भ्याम् वार्भिः ३ वारे, वार्भ्याम्, वार्भ्यः ४ वारः, वार्भ्याम्, वार्भ्यः ५ वारः, वारोः, वाराम्, ६ वारि, वारोः, वार्षु ७ स० प्रथमावत्

* प्रथमा तथा द्वितीया विभक्ति के जहां केवल रूप लिखे गये हों वहां शेषरूप पुंल्लिङ्गवत् समझना चाहिये ॥

(किम् शब्दः) कौन ।

किम्, के, कानि १ किम्, के, कानि २ ॥

(इदम् शब्दः) यह ।

इदम्, इमे, इमानि १ इदम्, एनत्, इमे, एने, इमानि, एनानि २ ॥

(एतद् शब्दः) यह ।

एतत्, एते एतानि १ एतत्, एते, एतानि २ ॥

(ब्रह्मन् शब्दः) ईश्वर ।

ब्रह्म, ब्रह्मणी, ब्रह्माणि १ ब्रह्म, ब्रह्मणी, ब्रह्माणि २ ॥

(अहन् शब्दः) दिन ।

अहः, अहनी, अहानि १ अहः, अहनी, अहानि २ अह्ना, अहोभ्याम्, अहोभिः ३ अह्ने, अहोभ्याम्, अहोभ्यः ४ अह्नः, अहोभ्याम्, अहोभ्यः ५ अह्नः, अह्नोः, अह्नाम् ६ अह्नि, अह्नोः, अहस्सु ७ स० प्रथमावत् ॥

(दण्डिन् शब्दः) दण्ड ग्रहणकर्त्ता कुल ।

दण्डि, दण्डिनी, दण्डीनि १ दण्डि, दण्डिनी, दण्डीनि २

(सुपथिन् शब्दः) सुपथगामी कुल

सुपथि, सुपथी, सुपन्थानि १ सुपथि, सुपथी, सुपन्थानि २

(ऊर्ज् शब्दः) बलीकुल ।

ऊर्क्-ग्, ऊर्जी, ऊर्न्जि १ ऊर्क्-ग्, ऊर्जी ऊर्न्जि २ ऊर्जा, ऊर्ग्भ्याम्, ऊर्ग्भिः ३ ऊर्जे, ऊर्ग्भ्याम् ऊर्ग्भ्यः ४ऊर्जः ऊर्ग्भ्याम्, ऊर्ग्भ्यः ५ ऊर्जः ऊर्जोः, ऊर्जाम् ६ ऊर्जि,ऊर्जोः ऊर्क्षु ७ स० प्रथमावत् ॥

(तद् शब्दः) वह

तत्, ते, तानि, १ तत्, ते, तानि २

(यद्शब्दः) जो

यद्, ये, यानि १ यद्, ये, यानि २

(शकृत् शब्दः) विष्ठा

शकृत्, शकृती, शकृन्ति १ शकृत्, शकृती, शकृन्ति२शकृता, शकृद्भ्याम्, शकृद्भिः ३ शकृते, शकृद्भ्याम्, शकृद्भ्यः ४ शकृतः, शकृद्भ्याम्, शकृद्भ्यः ५शकृतः, शकृतोः शकृताम् ६ शकृति, शकृतोः शकृत्सु, स० प्रथमावत् ॥

(ददत् शब्दः) देताहुआ कुल

ददत्-द्, ददती, ददन्ति-ददति १ ददत्-द्, ददती, ददन्ति-ददति २

(तुदत् शब्दः) पीड़ा देताहुआ कुल

तुदत्-द्, तुदन्ती, तुदती, तुदन्ति १ तुदत्-द्, तुदन्ती-

तुदती, तुदन्ति २ शेषरूप ददत् शब्दके समान।

(भात् शब्दः) प्रकाश

भात्-द्, भाती भान्ती, भान्ति, १ भात्-द्, भान्ती-भाती, भान्ति २ शेष रूप तुदत् पुंवत्॥

(पचत् शब्दः) पकाताहुआ कुल

पचत्, पचन्ती, पचन्ति १ पचत् पचन्ती, पचन्ति २

(दीव्यत् शब्दः) खेलताहुआ कुल

दीव्यत्-द्, दीव्यन्ती, दीव्यन्ति १ दीव्यत्-द्, दीव्यन्ती दीव्यन्ति २ शेष रूप तुदत् वत्॥

(धनुष् शब्दः) चाप।

धनुः धनूषी, धनूंषि १ धनुः, धनुषी, धनूंषि २ धनुषा धनुर्भ्याम्, धनुर्भिः ३ धनुषे, धनुर्भ्याम्, धनुर्भ्यः ४ धनुषः, धनुर्भ्याम्, धनुर्भ्यः ५ धनुषः, धनुषोः, धनुषाम् ६ धनुषि, धनुषोः, धनुःषु-धनुष्षु ७ स० प्रथमावत्॥

इसीप्रकार चक्षुष् (आंख) हविष् (होमकी सामग्री) पयस् (जल) ओकस् (स्थान) शब्दों के रूप होते हैं॥

(सुपुंस् शब्दः) श्रेष्ठ पुरुषोंका कुल

सुपुम्, सुपुंसी, सुपुमांसि १ सुपुम्, सुपुंसी, सुपुमांसि २ सुपुंसा, सुपुंभ्याम्, सुपुंभिः ३ सुपुंसे, सुपुंभ्याम्, सुपंभ्यः ४

सुपुंसः सुपुंभ्याम्, सुपुंभ्यः ५ सुपुंसः, सुपुंसोः सुपुंसाम् सुपुंसि, सुपुंसोः, सुपुंसु ७ स० प्रथमावत् ॥

(अदस् शब्दः) वह

अदः, अमू, अमूनि १ अदः, अमू, अमूनि २

इति हलन्तनपुंसकलिङ्गाः शब्दाः समाप्ताः ॥

याचनम् = मांगना । नर्त्तनम् = नाचना । कर्त्तनम् = काटना । निक्षेपणम् = फेंकना । प्रेषणम् = भेजना । वादनम् = बजाना । शयनम् = सोना । जागरणम् = जागना । अवलम्बनम् = सहारा । करणम् = करना । मरणम् = मरना । धरणम्=धरना । अध्ययनम्=पढ़ना । अध्यापनम् = पढ़ाना । मानम्=तौलना । दर्शनम्=देखना । निष्क्रमणम्= निकलना । प्रवेशनम्=घुसना । अवगुण्ठनम् = घूंघट । लुण्ठनम् = लेटना । आरोहणम्=चढ़ना । लम्बनम् = लटकना ॥

अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति = अच्छे पुरुष अपने कौल को पूरा करते हैं । परोपकाराय सतां विभूतयः = सज्जनों का ऐश्वर्य दूसरों की मदद के लिये होता है । अधि-

कस्याधिकं फलम्=अधिक का अधिक फल होता है।

अपन्थानं तु गच्छन्तं सोदरोऽपि विमुञ्चति=बुरे रास्ते पर चलनेवाले को भाई भी छोड़ देता है। अल्पविद्योमहागर्वी=थोड़ी विद्यावाला बहुत घमण्डी होता है। अविद्याजीवनं शून्यम्=विना विद्या के जीना वेफायदा है। अव्यवस्थितचित्तस्य प्रसादोऽपि भयङ्करः=चञ्चल चित्तवाले पुरुष की प्रसन्नताभी डर को पैदा करने वाली होती है।

कस्यचित् किमपि नो हरणीयम्=किसीका कुछ भी न चुराना चाहिये। कुगेहिनीं प्राप्य गृहे कुतः सुखम्?=खोटी औरत को पाकर घर में कहां सुख। क्षितितले किं जन्म कीर्ति विना=भूमि पर विना यश के जन्म निष्फल है। गतं न शोचामि कृतं न मन्ये=गये हुये का शोच नहीं करता और किये हुये का घमण्ड नहीं करता॥

हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः=हित करनेवाला और मन को आनन्द देनेवाला वचन दुर्लभ है। गुणी गुणंवेत्ति न वेत्ति निर्गुणः=गुणी गुणको जाना करता है निर्गुणी नहीं। चिन्ता समं नास्ति शरीरशोषणम्=फिक्र के बराबर और कोई देह को सुखानेवाला नहीं है।

छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति = थोड़े दुःख में बहुत दुःख समुपस्थित होजाते हैं। दर्दुरा यत्र वक्तारस्तत्र मौनं हि शोभनम् = जहांपर मेडक व्याख्याता हों वहां पर चुप रहना ही अच्छा है। नये च शौर्ये च वसन्ति सम्पदः = न्याय और शूरतामें ही धन रहता है। निर्वाणदीपे किमु तैलदानम् = दीपकके समाप्त होजाने पर तेल देना निष्फल है। मतिरेव बलाद्गरीयसी = बुद्धि बलसे भी बड़ी है। मूर्खस्य किं शास्त्रकथा प्रसङ्गः = मूर्खको शास्त्रकी कथासे क्या। रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि = प्रथम किये हुये पुण्य रक्षा करते हैं। विद्या समं नास्ति शरीरभूषणम् = विद्याके बराबर और शरीरका जेवर नहीं है। विनाशकाले विपरीतबुद्धिः = कष्ट होनेके समय बुद्धि उलटी होजाती है सम्पूर्णकुम्भो न करोति शब्दम् = पूरा भरा हुआ घड़ा शब्द नहीं करता। संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति = सोहबतसेही दोष और गुण होते हैं। अर्द्धो घटो घोषमुपैति नूनम् = आधाघड़ा जरूरही बोलताहै न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति = पहाड़की चोटीपर कमलिनी नहीं पैदा होती। अन्धस्य दृष्टिरिव पुष्टिरिवातुरस्य = पीड़ित पुरुषकी पुष्टि अन्धे की दृष्टि के समानहै।

साधारणोपदेशः।

ईश्वरः सर्वव्यापकोऽस्ति । यौष्माकीणानि समानि कार्याणीश्वरः पश्यति[1] तेन किमप्यज्ञातंनास्ति । तद्गृहं शीघ्रं नश्यति यास्मिन् गृहे सदा कलहोभवति । सज्जना यत्कर्मारभते तन्मध्ये न त्यजन्ति । विपदि धैर्यमेव सहायतां ददाति । विद्यासमं नास्ति धनं जगत्याम् । प्रतिवासिभिः सहमेलनं रक्षणीयं जनैः समैश्चसह बन्धुवद् वर्तितव्यम् । शरीरं पवित्रं रक्षणीयं पवित्रैर्बालकैः सह समेजनाः स्नेहं कुर्वन्ति । अधर्मेण यद् धनमर्ज्यते तन्नातिष्ठति यथाऽऽगच्छति तथैव गच्छति ।

साधारणोपदेशः (२)

कश्चिदपिजीवो न क्लेशनीयः, यथात्मनि सुखदुःखे भव-स्तथैव सर्वत्र विज्ञेयम् । यः शुद्धभावेन कार्यं करोति जग-दीश्वरस्तस्य सहायतां करोति । परोपकारिणो जनाः सुखि-नो भवन्ति । योऽन्येषां वृद्धिं दृष्ट्वा विषीदति स सर्वदा दुःखं लभते । यत्कार्यं स्वकीयेऽधिकारेभवेत् तत्सत्यतया कार्यम् । यो युष्माकं विश्वासं कुर्यात्तेन सह बिश्वासघातो-

१ इकट्ठा कियाजाता है ॥

न कर्तव्यः। कटुभाषणं कदापि न विधेयम्, कटुवचनं शायकवद्[1] हृदि क्षतं करोति। दुर्जनानां सङ्गतिः कदापि न कर्तव्या, अनया हानि रेव भवति न च लाभः। दुर्जनाः स्वमित्रैः सहविश्वासघातं[2] कुर्वन्ति, अतएव इत्थंभूतेषु नरेषु विश्वासो न विधेयः। धर्मकार्येषु विघ्नाबाहुल्येन भवन्ति, अत एव तत्करणे विलम्बो न कर्तव्यः।

साधारणोपदेशः (३)

शुभकर्मणां शुभं फलं भवति, अशुभकर्मणां चाशुभम्। मित्रं तदेवास्ति यदापत्काले न विजहाति[3]। शत्रुर्मधुरालापमपि[4] कुर्यात्तथापि तस्य विश्वासो न कार्यः। महतामाज्ञा सर्वदा मन्तव्या, अनेनैव युष्माकं कल्याणमस्ति। अविचार्य[5] किञ्चिदपित्कार्यं न कार्यम्, नतु पश्चात्पश्चात्तापं करिष्यथ। असत्यं न भाषणीयम्, असत्यभाषिणां[6] कश्चिदपि विश्वासं न करोति। सविद्यस्य[7] नरस्य सर्वत्र प्रतिष्ठा भवति, मूर्खस्य[8] चाऽप्रतिष्ठा भवति। सर्वेषां शुभचिन्तकतायां स्थैर्यं न चाऽशुभचिन्तकतायाम्। मरणान्ते पापपुण्यमन्तरा[9] नान्यत् सत्रा गच्छति। सर्वैः सह मधुरालापेन भाव्यं कटुवचनं केनापि सहनोच्चारणीयम्॥

---

१ घाव। २धोखादेना। ३ छोडताहै। ४मीठा बोलना। ५बिना विचारके। ६झूठ बोलने वालोंका। ७पढ़े लिखेका। ८ मूर्खकी। ९बिना।

साधारणोपदेशः (४)

सद्गुणैर्मनुष्याः पूज्यन्ते गुणमन्तरा कस्या प्यादरो न भवति। यथा शुकान् सारिकाश्च[1] जनाः पालयन्ति न च कोकान्[2]। शिक्षाप्रदानि वाक्यानि न रोचन्ते[3], इदं प्रायकं दृष्टम् यथा यावत्कटुकं भेषजं न पीयते तावद् ज्वरो न नश्यति। महतां समीपे निवासेन लघवो[4]ऽपि महीयन्ते[5], इदं प्रत्यक्षमस्ति यथा लता वृक्षसदृशी वर्धते। उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये। पयः पानं भुजङ्गानां[6] केवलं विषवर्धनम्। पापकर्माणि कृत्वा कश्चित् सुख न कामयेत[7] स कथं सुखभाग्[8] भवेत्, यथा-अर्कवृक्षा[9]रोपणेन किमसौ आम्रो भवितुमर्हति अपितु न

साधारणोपदेशः (५)

वेदः सत्यविद्यानां पुस्तकमस्ति तस्य पठनं पाठनं श्रवणं श्रावणं च मनुष्यमात्रस्य परमधर्मोऽस्ति। सत्यग्रहणकरणे असत्यस्य च परित्यागे सर्वदा सर्वैरुद्यतेन भाव्यम्। सर्वाणि कर्माणि धर्मानुसारेण सत्यमसत्यं च विचार्य कर्तव्यानि। सर्वैः सद्भावपूर्वकं धर्मानुसारेण यथायोग्यं वर्त्तितव्यम्॥ शिशवः! प्रभातमुत्थाय प्राणीश्वरस्य ध्यानं कुरुत येन युष्म-

१ मैना। २ कव्वोंको। ३ अच्छे लगते हैं। ४ छोटे। ५ बड़े होजाते हैं। ६ सांपोंका। ७ चाहे। ८ सुखी। ९ आकड़ेका पेड़।

दर्थं नाना[1]विधानि वस्तूनि विरचितानि[2] । प्रातरुत्थाय यत्कार्यं क्रियते तस्मिन्मनः सम्यग् लगति । यथा पठनं प्रभाते भवति न तथेतरस्मिन् काले संजायते । प्रातःकालेयत् स्मिर्यते न तच्छीघ्रं विस्मिर्यते, बुद्धिश्च विवर्धते ।

साधारणोपदेशः (६)

उपहासो[3] वैरस्य मूलमस्ति, अत एवोपहासः केनापि सह न कर्तव्यः । यदि कश्चिद् युष्माकमुपहासं कुर्यादेवं वैरं च मन्येत तथापि युष्माभिर्नैवं कार्यम्, एवमेव करणेन युष्माकं कल्याणं भविष्यति । यो नरोऽनुपकारे[4] उपकारं[5] करोति स उत्तमः, योऽनुपकारेऽनुपकारं करोति स मध्यमः, यश्चोपकारेऽनुपकारं कुरुतेऽसौ नीचः । मातापित्राचार्याणां ये बालका आज्ञां मन्तारस्त एव सुखं भोक्तारो भवन्ति । अभिवादनशी[6]लस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः । चत्वारि तस्य वर्धन्त आयुर्विद्या यशोबलम् । निम्नलिखितानां महानुभावानां जीवनचरितानि पाठितुं योग्यानि । श्रीयुत शिवराजस्य महाराजप्रतापस्य विक्रान्तस्य रणजीतसिंहस्य । वेदमतप्रचारकस्य स्वामिदयानन्दस्य च ॥

१ बहुत तरह के । २ बनाये हैं । ३ हँसीठट्ठा । ४ बुराई । ५ भलाई । ६ प्रणाम कर्ता की ।

साधारणोपदेशः (७)

दुःखे केवलमीश्वर एव साहाय्यं करोति। तेनैव, अस्मदीयानि शरीराणि मातुरुदरे विरचितानि। तेनैव च सकलानीन्द्रियाणि दत्तानि। यैरिन्द्रियै रूपरसगन्धस्पर्श शब्दादीन् विषयान् गृह्णीमः। यथा नेत्रेण रूपं पश्यामः। जिह्वयारसमास्वादामहे। नासिकया गन्धं जिघ्रामः। त्वचा स्पर्शं विजानीमः। श्रोत्रेण शब्दं शृणुमः। इमानि विश्वानीन्द्रियाणि ज्ञानसाधनानि सन्ति। नेत्रे विकारेसति वयं द्रष्टुमसमर्थाः। सर्वं जगद् ध्वान्तमयं प्रतीयते। रसनायां विकारे सति मधुराम्ललवणकटुकषायतिक्तरसान् विज्ञातुमसमर्थाः। एवमेव सर्वत्र विज्ञेयम्। य इत्थमुपकर्त्ता किं तस्याज्ञा नहि मन्तव्या? अपितु, अवश्यमेव मन्तव्या स्वप्नेऽपिनविस्मर्तव्या॥

साधारणोपदेशः (८)

धर्मस्य सार्वभौमानि कानि लक्षणानि? इति जिज्ञासा वर्तते। धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः। धीराविद्यासत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥ १॥ वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः। एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम्॥ इति मनुमहाराजेन धर्मचिह्नानि प्रदर्शितानि। किमेतानि सार्वजनीनानि, उताहो विरुद्धानि?

विज्ञानदृष्ट्यातु सार्वजनीनानि परन्त्वन्धपरम्परयाग्रहदोष-दुष्टया विरुद्ध विथ्यथाचेदं सकलं प्रतीपं प्रतीयते । वेदविहितानि च यानि कर्माणि सन्ति तानिसार्वजनीनानि न तत्र पक्षपातत्वं मत्वरेण नरेण कदापि विज्ञेयम् ॥

(पुत्र्याः पित्रे पत्रम्) प्रयागतः ।

श्रीमनज्ञानध्वान्तनिवारक ! विज्ञानप्रकाशक ! प्रेमाकर ! परमपूज्यतम ! पितः ! अभिवादये

भवन्तमिमं हर्षप्रदं समाचारं श्रावयामि-वार्षिक्यां परीक्षायां सर्वासु कन्यकास्वहं प्रथमां संख्या सम्प्राप्तास्मि,पारितोषिके मह्यं पञ्चरूप्यकाणि विश्वेषां वेदानां समानि पुस्तकानि कौशेयवस्त्रसंवेष्टितानि च मिलितानि येनदानी महमतीव संहृष्टास्मि नूतनायां कक्षायामधुना मे प्रवेशो भविष्यति, अतएव नव्यानां पुस्तकाना मावश्यकता भविष्यति तदर्थं विंशतिमुद्राः प्रेषणीयाः । मातुश्चरणौ संगृह्य मुहुर्मुहुः प्रणमामि–शेषं कुशलम् ।

भावत्की पुत्री प्रियंवदा

माघशुक्ला १९ १९६७ वि०

---

१ अन्धकार । २ प्रेमकाखान । ३ रशमी । ४ खुशहूं । ५ आपकी ।

मित्राय-पलाशम्। कर्णपुरतः।

प्रियतमाय सहृदयाय सुहृज्जनाय धर्मदत्ताय नमोऽस्तु। सखे! अद्यप्रभाते भावत्कं पलाशं समुपलब्धम् अधीच च सकलः समाचारोऽवबोधि।

आत्मनीनां परीक्षोत्तीर्णतां समाकर्ण्य प्रसीदामि परन्तु भावत्कीमनुत्तीर्णतां विज्ञाय विषीदामि। अधुना पश्चात्तापकरणेन किं भवति यद् भूतं तद् भूतम्। 'हेयं दुःखमनागतम्' अनागतानि च यानि दुःखानि तेषां दूरीकरणाय नरेण प्रवरेण प्रयतितव्यमिति। येऽश्वारोहा भवन्ति त एव तु पतन्ति न च पेष्टूयः। नेदमवेद्यं कार्यं यत्र च लज्जेत भवान्। स्वकीयान् वर्तमानान् विचारान् विहाय पुनरपि विद्यालयगमनेन भाव्यमितिशम्॥

भवत्सखः-

त्रिविक्रमः। चैत्र शुक्लापञ्चमी १ १९८७ वि०

कथा प्रथमा (१)

जले प्रतिविम्बितस्य शुनः।

कश्चिच्छ्वा मुखेऽपूपशकलं धृत्वा नद्याः परं गच्छन्नन्त-

१ पड़कर। २ सब। ३ जाना। ४ अपनी। ५ सुनकर। ६ प्रसन्न हूं। ७ आपकी ८ फेल। ९ दुखी हूं। १० श्रेष्ठ। ११ सवार। १२ पीसनेवाली। १३ निन्दित। १४ कोई कुत्ता। १५ पुवे के टुकड़े को। १६ जाता हुआ॥

रात्मनः प्रतिबिम्बं तोयेऽपश्यत् । तदाऽसौऽचिन्तयत्—'यद-यमपरः कुक्कुरोऽपूपखण्डं गृहीत्वा गच्छति ' इति । तस्मात्तं शकलं जिघृक्षुर्लोभेन मुखमपावृत्य तदादातुं यावत् प्रवृत्त-स्तावत्तन्मुखादपूपशकलमुदके पतितं तन्नद्यां जगाम । पुनः स तन्न लेभे ॥

तात्पर्यम् ।

य ईश्वरेण दत्तेऽर्थे सन्तोषमनवाप्याऽन्यस्यार्थं गृहीतुं वाञ्छति तस्येतरस्माल्लाभो न जायत एव । अन्यच्च स्वीयोऽर्थोऽपि नश्यति ॥

कथा द्वितीया (२)

जम्बुकद्राक्षाफलानाम् ।

कश्चिज्जम्बुकः क्षुत्क्षामकण्ठः परिभ्रमन् द्राक्षामण्डपमभ्यैत् तत्रागत्योर्ध्वं विलोकयता तेन बहवो दर्शनीयाः पक्वफलानां स्तवका लम्बमाना अदर्शिषत । परं च मण्डपस्योच्छ्रितत्वयैकमपि फलं न विविन्दे । उत्पतंस्तु शश्राम । अन्ततः किं

१ अपनी परछाईं । २ जल में । ३ कुत्ता । ४ पकड़ने वाला । ५ मुखको खोलकर । ६ लगा । ७ दिये हुये पदार्थ में । ८ सन्तुष्ट न होकर । ९ दूसरे से ॥ १० स्यार अंगूरोंका । ११ भूखसे घबड़ाया हुआ । १२ सुन्दर । १३ लटकते हुये । १४ देखे । १५ ऊंचे होनेसे । १६ आखिरकार ॥

यद्दूरं गत्वा पश्चाद्द्राक्षामण्डपे दृष्टिविधाय भर्त्सनापूर्वमिदमाह " गृह्णातु नाम कोऽप्येतानि फलानि । अहंत्वपक्कान्यम्लानीति संत्यज्य गच्छामि ।

तात्पर्यम् ॥

केचन नरा अलभ्यवस्तुनि कमपिदोषमारोप्यात्मनो लघिमानं छादयन्ति । नेदं साधुकृत्यम् ॥

कथा तृतीया (३)

आदित्यक्रमेलयोः ।

एकदा कश्चित् क्रमेलक आदित्यं सप्रश्रयं याचितवान्-"भो आदित्य ! यथा गोमहिषादयः शृङ्गिणः कृता भवता तथा किमहं न क्रिये । विषाणैराभिरहं शत्रुभ्यस्त्राणं विधास्यामि । एतां मे विज्ञप्तिं श्रोतुमर्हति देवः" । तं भगवानादित्योवदाति " रे मूढ ! यन्मया तुभ्यं दत्तं तदलं विचार्यैव दत्तम् । तेन सन्तुष्टेन त्वया भाव्यम् । तदकृत्वा यदन्यस्मै दत्तं तत्पुरस्कृत्य तद्याचसे । अस्य धृष्टत्वस्य दण्डं तद्धामुहि । तव कर्णौ ह्रस्वौ । भविष्यतस्त्वं चातिभार वाहको भविष्यसि" ॥

तात्पर्यम् ।

अस्मिञ्जगतीशेन यद्यद्दत्तं तत्तदुपपन्नमेव । ये तदन्यथा

१ झिड़का के साथ यह बोला । २ कच्चे और खट्टे । ३ कोई । ४ न प्राप्त होने योग्य पदार्थ में ५ दोषलगाकर । ६ अपनी । ७ क्षुद्रभावको ८ ढांकते हैं ॥ ९ सूर्य और ऊंटका । १० प्रेमके साथ । ११ सींगोंसे । १२ बचाव १३ उचित है

कर्तुं यतन्ते तेऽसमीक्ष्यकारिणो मूढा इति वक्तव्यम् । ईदृशानामुपाया निष्फला भवन्ति । अपि च ते दुःखभाजो भवन्ति

कथा चतुर्थी (४)

पात्रयोः ।

मृत्पात्रं रीतिपात्रं च नद्यास्तीर आस्ताम् । ऊर्ध्वप्रदेशादागतेन पूरेणोह्यमानयोस्तयोर्मृत्पात्रं चिन्तापरं बभूव । रीतिपात्राभिघाते संवृत्तेऽहं भङ्क्तास्मि' इति । दुःखितं तद्दृष्ट्वा रीतिपात्रं तदुवाच "भोः, मा बिभीहि ! अहं त्वां रक्षिष्यामि" इति । मृत्पात्रं तदवदत्—भ्रातर्दूरत एव मां प्रतिमर्षस्व । त्वत्तोऽहमतीव बिभेमि । यतः परस्पराभिघाते नाशो ममैव भविष्यति ॥

तात्पर्यम् ।

श्रीमता सार्धं सम्बन्ध आसंभावो वा दरिद्रं विपदि पातयति । श्रीमतः प्रातिवेश्य कलहेऽयं कलहं करोतु, स वा कलहं करोतु, दरिद्र एव नश्यति ॥

---

१ विचारशून्य । २ दुःखके भागी । इति । ३ पीतलका वर्तन । ४ ऊपरकी ओरसे आये हुयेसे । ५ जलके समूहसे । ६—पीतलके पात्रका धक्का लगनेपर ७ टूटर । ८ कहिये । ९ विश्वासका होना ॥

कथा पञ्चमी (५)

हंसीमनुजयोः।

कस्यचिन्मनुजस्यावासे एका हंसी बभूव। सा प्रत्यहं[1] स्वर्णस्यैकमण्डं[2] निचिक्षेप[3]। तद्गृह्णतस्तस्याशोपचितिरिष्टा[4]। परं तया उपचयोऽभवत्। सोऽचिन्तयत्-"अण्डनिर्गमस्थानमासाद्[5]येयमपारं धनमेकपद एव लभेय[6]"। तदा स तस्या उदरं विदारयामास[7]। ततो यावदन्तरवलोकयति[8] तावद्रिक्तं[9] मेव ददर्श। पश्चाद् बहुतप्यत[10]॥

तात्पर्यम्।

ईश्वरो जगदात्मा यं प्रति त्यागभोगपालं भविष्णुं[11] धनं ददाति तस्य संग्रहेच्छा चेन्मितव्ययेन[12] तस्मादेव किञ्चित् स उद्धरेत्[13]। इदमनादृत्य[14] योऽतिलोभेनाऽकाण्डे[15] श्रीमान भवितुमीहमानो[16] महति साहसे[17] आत्मानं योजयति स साहसे बद्ध[18] प्रयत्नो भूत्वा मूलधनमपि हारयति[19]॥

---

१ नित्य। २ सोनेका। ३ छोड़तीथी। ४ मनोरथहानिइष्टथी। ५ प्राप्तकर्के। ६ लेऊं। ७ फाड़डाला। ८ देखताहै। ९ खाली। १० बहुत दुःखीहुआ। ११ होनहार। १२ उचितखर्चकरनेसे। १३ निकाले। १४ अनादरकरके। १५ विनासमयके। १६ चेष्टाकरता हुआ। १७ बिना विचारे। १८ प्रयत्नमें बन्धाहुआ। १९ खोबैठता है॥